प्रेम पत्र



पूज्य जय प्रकाश नारायण जी

सादर प्रणाम।

मैंने आपकी सेहत का ख्याल रखकर बहुत दिन से कोई प्रेम-पत्र आपको नहीं लिखा लेकिन पिछले दिनों में आपने कई छोटे-मोटे प्रेम पत्र जनता के नेताओं को भेजे, इस बात का भी मुझे कोई अफसोस नहीं। लेकिन अब आपने प्रधान मंत्री श्री मोरार जी देसाई को पत्र लिखा कि आप उनमें और श्री. चरणसिंह जी में सुलह-सफाई कराने को तैयार हैं। यह जानकर इसलिये दुःख हुआ कि इस काम में पड़ने से आपकी सेहत पर बुरा असर पड़ सकता है।

आप तो यह जानते ही हैं कि मोरार जी भाई और चरणसिंह जी दोनों जिद्दी नेता हैं। अगर चरण सिंह जी आपके पास पटना जाने को तैयार हो गये तो मोरार जी भाई का यही बात मानना मुश्किल है और यदि मोरार जी ने हवाई जहाज से जाकर आपके दर्शन करना मंजूर कर लिया तब शायद श्री चरण सिंह जी आपके चाय के बुलावे को नामंजूर कर दें।

आपका इनकी खटपट से केवल इतना सम्बन्ध है कि जगजीवन राम और चरणसिंह का हक छीनकर आपने मोरार जी भाई को गद्दी पर बिठा दिया। अब ये बेचारे क्या करें? आपका सम्पूर्ण क्रान्ति का अभियान तो ठप्प हो गया। जो कुछ थोड़ी-बहुत क्रान्ति रह गई है वह भी इन्दिरा गांधी ने ले ली। इसलिये इनका आपस में लड़ना स्वाभाविक है।

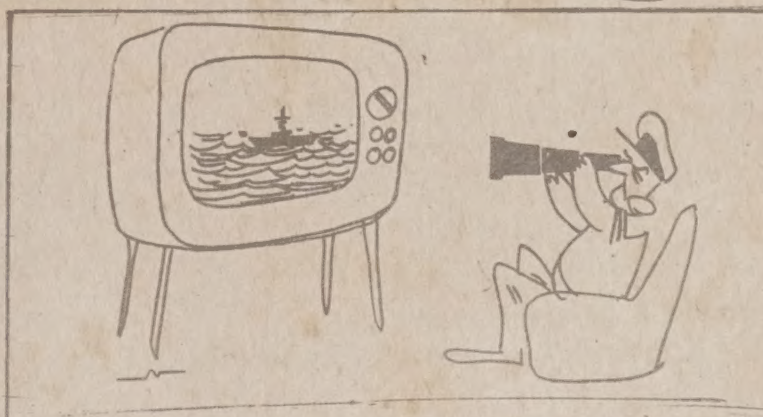
आपकी सेवा में यह सुझाव देना चाहता हूँ कि आप इनके बीच-बचाव के चक्कर में न पड़ें। दोनों में से जो पहलवान अखाड़े में जीतकर आ जाये उसी के सर पर ताज रख दें। इससे आपकी सेहत पर बुरा असर नहीं पड़ेगा।

आपका

चिल्ली

मुख पृष्ठ पर

बीन के इस जादू से
बुझती सिगरेट जल पड़ी
मधुर स्वरों से इठलाती
नागिन सी वो चल पड़ी।
बहकी बहकी मस्त नशीली
धुन मन को हर लेती है
जिसको चाहे बीन चिल्ली की
बस में अपने कर लेती है॥



दीवाना

अंक : ३, १८ जनवरी से २४ जनवरी १९७९ तक
वर्ष : १५

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दें
छमाहीः २५ रु०
वार्षिकः ४८ रु०
द्विवार्षिकः ९५ रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिए पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें। —सं०

काका के कारतूस



प्रश्न 'दीवाना' के दीवानों के उत्तर काका हाथरसी के

अरुण कुमार पप्पे, मेडीकल कालेज, भरतपुर

प्र० : जनता पार्टी में फूट है, क्या यह झूठ है ?

उ० : ऊंची कुर्सी कह रही, लूट सके तो लूट ।
अंतकाल पछताएगा, पार्टी जाए टूट ॥

बिकी साहनी, इंदौर

प्र० : फिल्मों की हीरोइन हमेशा सोलह वर्ष की ही क्यों दिखाई देती हैं ?

उ० : कलाकार की कलम का, मेकप करे कमाल ।
साठा बुढ़िया भी लगे, गुड़िया सोलह साल ॥

शकील अहमद, कोटा (राज०)

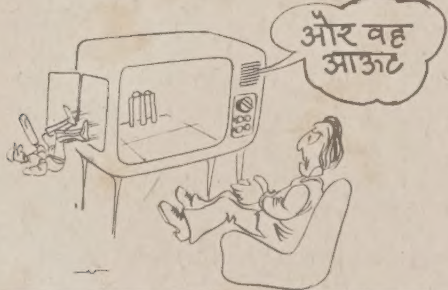
प्र० : 'ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय' यह कहावत आज के युग में कहां तक सत्य है ?

उ० : प्रेम, फिल्म औ' इश्क में ढाई अक्षर जान ।
पंडित है वह आधुनिक, जिसको इनका ज्ञान ॥

कैलाश प्रसाद, नागालैंड विहार, दिल्ली

प्र० : शादी शुदा आदमी की क्या पहचान है ?

उ० : काया ढीली, पिलपिली, पिचके-पिचके गाल ।
पत्नी की फटकार से, हो जाता यह हाल ॥



नारायण शर्मा, नाहर कटिया (आसाम)

प्र० : मैं किसी लड़की से बहन कहता हूं तो वह नाराज क्यों हो जाती है ?

उ० : इस रिश्ते के बहाने, डाल रहे कुछ फन्द,
बहन कहाना इसलिए, उसको नहीं पसन्द ।

भूपेन्द्र देवगुण, अंधा मुगल (दिल्ली)

प्र० : प्यार के अंधे को क्या दिखाई नहीं देता है ?

उ० : जिस तरह सावन के अंधे को दिखें हरियालियां,
प्यार के अंधे को दीखें, प्यारियां ही प्यारियां ।

सुरेश चन्द्र शर्मा 'निशांत', जबलपुर

प्र० : मैं अक्ल खरीदने व बेचने की दुकान खोल रहा है
ग्राहक बनेंगे क्या ?

उ० : अक्ल आपके पास यदि, होवे कुछ श्रीमान,
उसे बेचने के लिए, मत खोलो दूकान ।

अनिल कुमार 'अनल,' मीरगंज (गोपाल गंज)

प्र० : मंदिर में कीर्तन, भजन सुनने पर नींद आने ल
फिल्म देखने में क्यों नहीं आती ?

उ० : हुस्न-इश्क के पारखी फिल्म-इल्म के दास,
भजन-कीर्तन के भला, क्यों जायेंगे पास ।

जयकिशन अग्रवाल, खरसिया (म० प्र०)

प्र० कोई लड़की किसी लड़के से प्यार करना चाहती है,
उसे क्यों ठुकरा देता है ?

उ० : काका से मत छिपाओ, सच बतलादो
किस-किस 'मिस' को अब तलक लगा चुके फट

विजय भास्कर राव, दुलियाजान (आसाम)

प्र० : कोई काम शुरू करने से पहले भगवान का स्मर
करते हैं ?

उ० : काम-धाम से पूर्व ही, करें इष्ट का ध्यान,
उनकी करें सहायता, दीन-बंधु भगवान ।

अंजुम इमरान, औरंगाबाद

प्र० : काका जी 'दीवाना' के बारे में कुछ बताईए ?

उ० : पढ़ा है जब से 'दीवाना,' सुनायें किसको अफसाना,
कि सम्पादक भी अब हमको, दिखाई देता दीवाना ।

संजय तलवाड़, नई दिल्ली

प्र० : आगामी चुनावों में किसको वोट देना चाहिए ?

उ० : कोई कितने नोट दे, मारो उनपर चोट,
संजय हो तुम इसलिए, दो मम्मी को वोट ।

ओम प्रकाश बंसल, मुरैना (म० प्र०)

प्र० : काकाजी, आपके चरण तो हमने छू लिए, काकी
छूयें ?

उ० : मतलब से कुछ भक्तगण, करें चरण-स्पर्श,
चरण छुअन के बहाने, उड़ा ले गए पर्स ।

बद्रीप्रसाद वर्मा 'अन्जान', गोला बाजार

प्र० : काका जी आप यश के लिए इतने लालची क्यों हैं

उ० : लालच के आरंभ में, लगा हुआ है लाल,
बद्री भाई दरिद्री, बिन लालच कंगाल ।

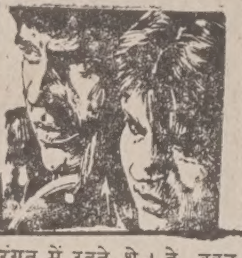
अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।

काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर म
नई दिल्ली-११०००२

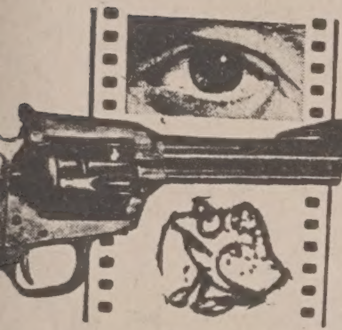
निर्देशक कृष्ण शाह का

७० एम एम (मियां मिट्ठू)

खलीमार



पहला भारत—अमरीकी सह निर्माण



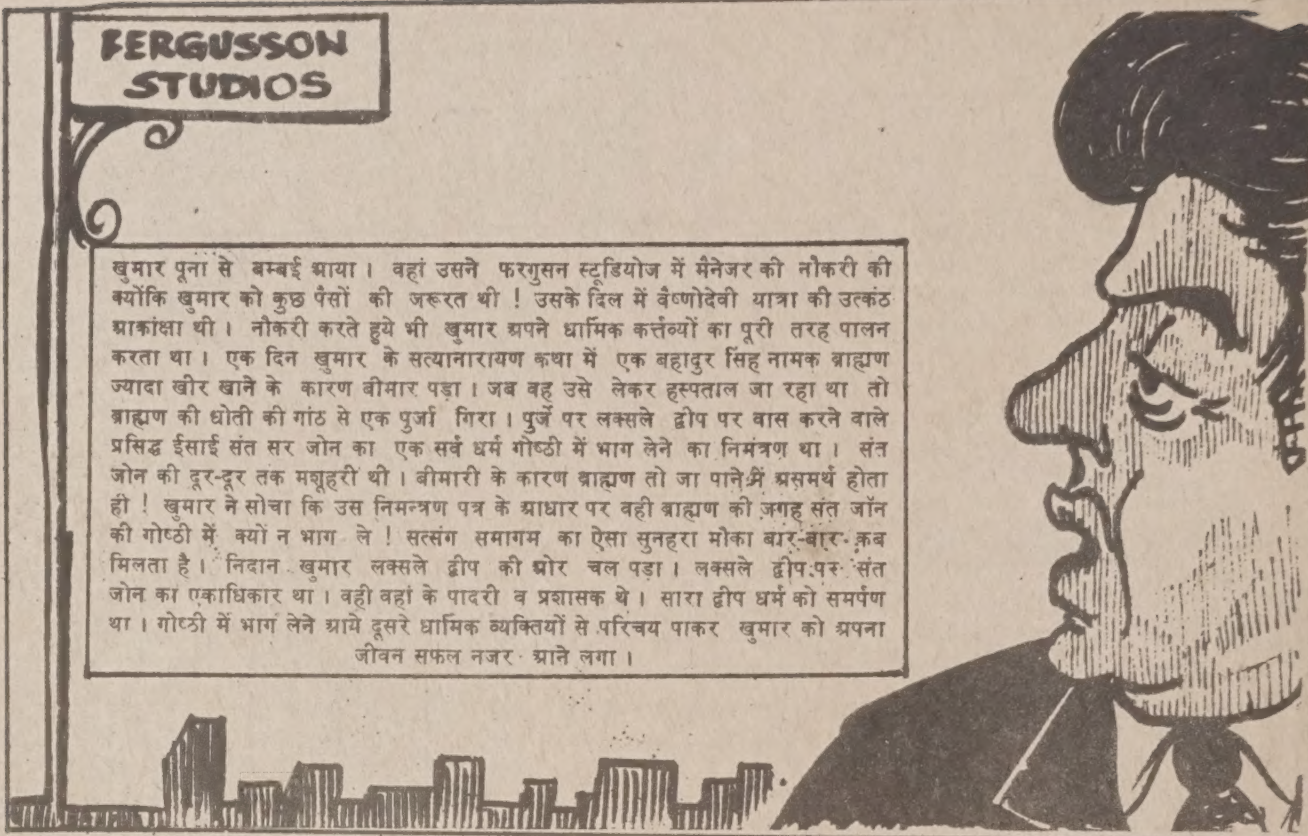
पात्र परिचय

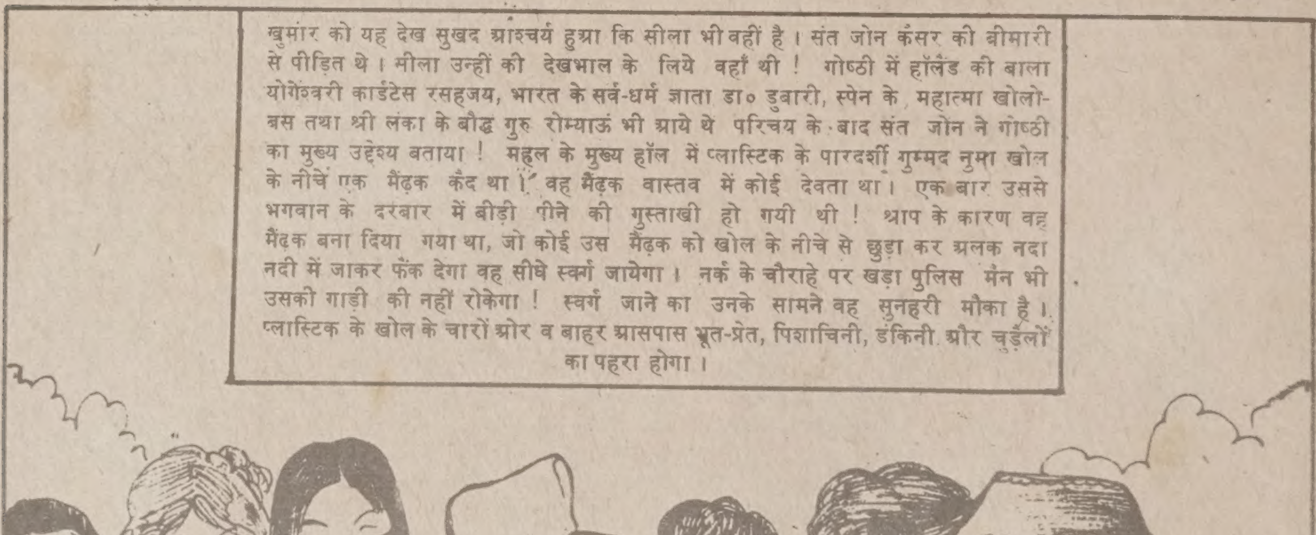
रैक्स हैरीसन—सरजान लक्सले
जोन सैक्सन—खोलो बस
सिल्विया माइल्स—काऊंटेस रस हजम
धर्मेन्द्र—खुमार
जीनत अमान—सीला
ओ. पी. रल्हन—रोम्याऊं
शम्मी कपूर—डाक्टर डुबारी
मूलकथा—स्टेनफोर्ड शेरमान तथा कृष्ण शाह
सह निर्माता—लक्ष्मी जूडसन

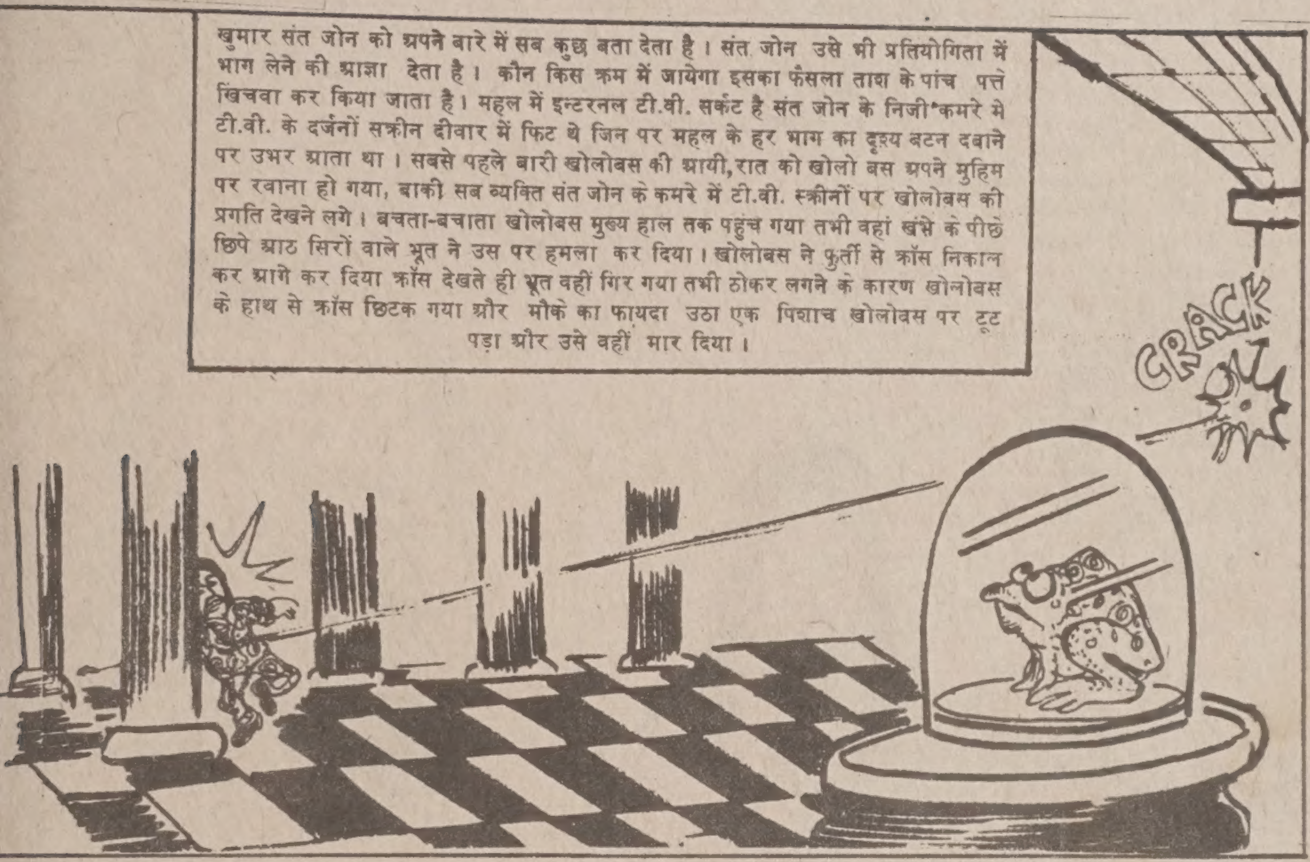
सीला के पिता रंगून में रहते थे। वे बहुत धार्मिक स्वभाव के व्यक्ति थे। सुबह शाम नियमित रूप से पूजा-पाठ व व्रत रक्खा करते। एक दिन रंगून के एक बैंक के चौकीदार को वह मोह माया की नश्वरता पर उपदेश देते समय जोर से जम्हाई लेने लगे तो मुँह ज्यादा खुल गया और जबड़ा उतर जाने के बाद वह चल बसे ! डाक्टर डुबारी सीला व उसकी मां को भारत ले आये। डुबारी ने सीला को धर्म-पिता बन पंच गनी के अंग्रेजी स्कूल में पढ़ाया। डाक्टर डुबारी स्वयं बहुत धार्मिक आदमी थे। वे रोज बाइबल पढ़ते। दुखियों का दुख उनसे देखा नहीं जाता था इसलिये वह काले चश्मे पहने रहते थे।



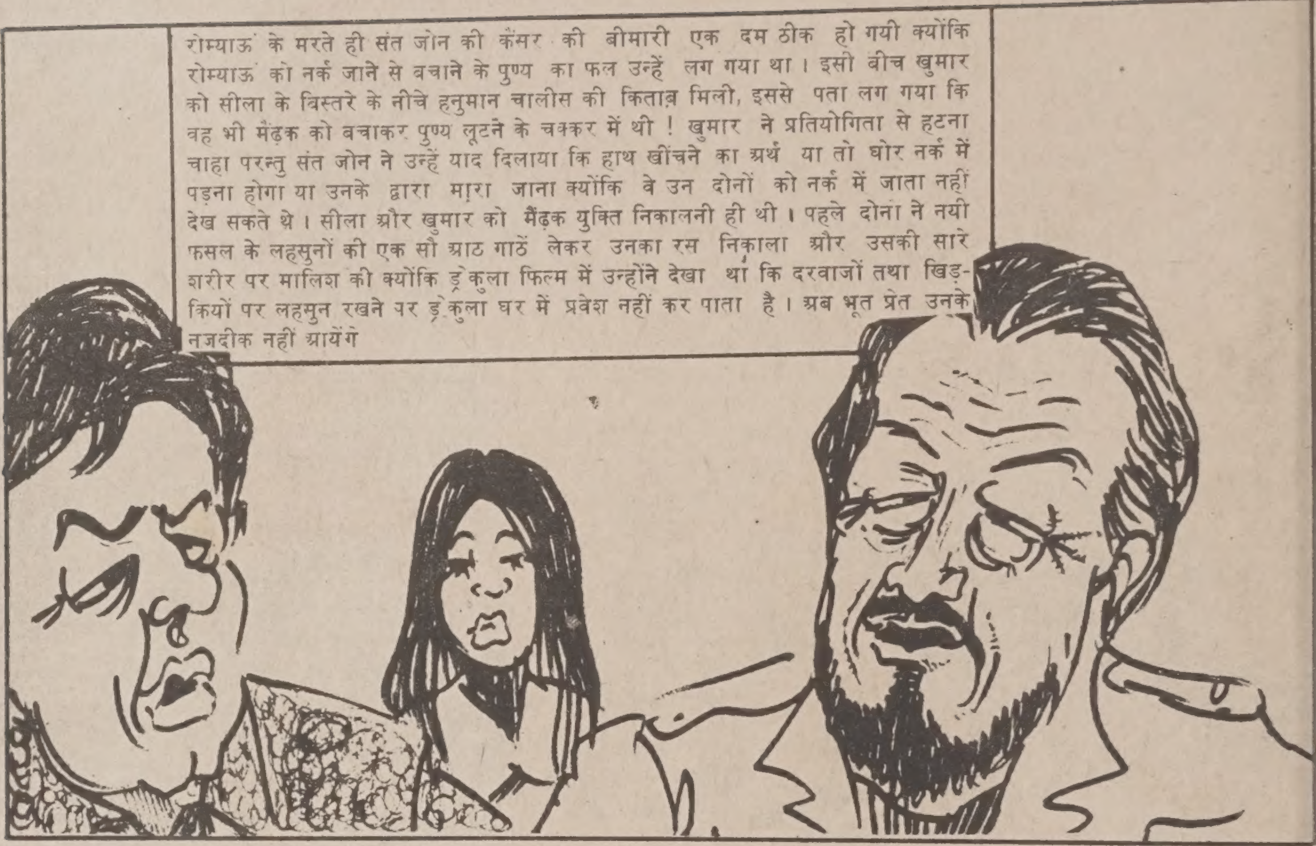
शिक्षा प्राप्त करने के बाद सीला ने मां की सलाह पर नर्सिंग की ट्रेनिंग ली। मानव मात्र की सेवा का नर्सिंग के काम से अच्छा और क्या हो सकता है। ट्रेनिंग के बाद वह पूना में एक नर्सिंग होम में रिसेप्शनिस्ट लगी। पूना सेना का एक महत्वपूर्ण ट्रेनिंग केन्द्र है। पूना में युवा फौजी अफसर आते और जाते ही रहते थे। सीला के कई युवा अफसर मित्र बने, वह प्रायः उनके साथ आर्मी मैस क्लब जाती। वहीं उसकी मुलाकात कैप्टन खुमार से हुई, दोनों की मित्रता ने रंग पकड़ा। खुमार कमांडो ट्रेनिंग लेने आया था। उनकी मित्रता इतनी घनिष्ट हो गयी कि सीला ने अपने फ्लैट की डुप्लीकेट चाबी खुमार को दे दी। खुमार का भी धर्म में अटूट विश्वास था। वे दोनों रात गये तक धर्म, जप-तप तथा हवन पूजा के महत्वों पर पर प्रायः चर्चा करते रहते। खुमार पर धर्म का रंग इतना गहरा जम गया कि एक दिन परेड के समय वह भक्ति लहर में बह गया और उछल-उछल कर 'जय माता दी' के नारे लगाने लगा। फलस्वरूप उसे सेना के पद से निकाल दिया गया। उसने सीला से मानव मात्र के कल्याण के लिये अखंड यज्ञ कराने का प्रस्ताव किया ! सीला ने बैंक खाते की अपनी सारी जमा पूंजी लाकर उसे दी ! धूमधाम से यज्ञ समापन हुआ। खुमार दिन को भी अब सीला के फ्लैट में ही सत्संग वगैरह कराने लगा, एक दिन सीला ड्यूटी से वापिस आई तो उसने देखा कि खुमार एक अमेरिकन महिला को उपदेश दे रहा है। सीला अपने फ्लैट में बगैर आर्य समाज मन्दिर में शुद्धि किये किसी के प्रवेश के विरुद्ध थी। इसी बात पर दोनों में मतभेद हुआ और दोनों अलग हो गये।


FERGUSSON
STUDIOS
खुमार पूना से बम्बई आया। वहां उसने फरगुसन स्टूडियोज में मैनेजर की नौकरी की क्योंकि खुमार को कुछ पैसों की जरूरत थी! उसके दिल में वैष्णोदेवी यात्रा की उत्कंठ आकांक्षा थी। नौकरी करते हुये भी खुमार अपने धार्मिक कर्त्तव्यों का पूरी तरह पालन करता था। एक दिन खुमार के सत्यानारायण कथा में एक बहादुर सिंह नामक ब्राह्मण ज्यादा खीर खाने के कारण बीमार पड़ा। जब वह उसे लेकर हस्पताल जा रहा था तो ब्राह्मण की धोती की गांठ से एक पुर्जा गिरा। पुर्जे पर लक्सले द्वीप पर वास करने वाले प्रसिद्ध ईसाई संत सर जोन का एक सर्व धर्म गोष्ठी में भाग लेने का निमंत्रण था। संत जोन की दूर-दूर तक मशूहरी थी। बीमारी के कारण ब्राह्मण तो जा पाने में असमर्थ होता ही! खुमार ने सोचा कि उस निमन्त्रण पत्र के आधार पर वही ब्राह्मण की जगह संत जॉन की गोष्ठी में क्यों न भाग ले! सत्संग समागम का ऐसा सुनहरा मोका बार-बार कब मिलता है। निदान खुमार लक्सले द्वीप की ओर चल पड़ा। लक्सले द्वीप पर संत जोन का एकाधिकार था। वही वहां के पादरी व प्रशासक थे। सारा द्वीप धर्म को समर्पण था। गोष्ठी में भाग लेने आये दूसरे धार्मिक व्यक्तियों से परिचय पाकर खुमार को अपना जीवन सफल नजर आने लगा।


खुमार को यह देख सुखद आश्चर्य हुआ कि मीला भी वहीं है। संत जोन कैंसर की बीमारी से पीड़ित थे। मीला उन्हीं की देखभाल के लिये वहाँ थी! गोष्ठी में हॉलैंड की बाला योगेश्वरी कार्डटेस रसहजय, भारत के सर्व-धर्म ज्ञाता डा० डुबारी, स्पेन के महात्मा खोलोब्रस तथा श्री लंका के बौद्ध गुरु रोम्याऊं भी आये थे परिचय के बाद संत जोन ने गोष्ठी का मुख्य उद्देश्य बताया! महल के मुख्य हॉल में प्लास्टिक के पारदर्शी गुम्मद नुमा खोल के नीचे एक मैंढ़क कैद था। वह मैंढ़क वास्तव में कोई देवता था। एक बार उससे भगवान के दरबार में बीड़ी पीने की गुस्ताखी हो गयी थी! श्राप के कारण वह मैंढ़क बना दिया गया था, जो कोई उस मैंढ़क को खोल के नीचे से छुड़ा कर अलक नदा नदी में जाकर फेंक देगा वह सीधे स्वर्ग जायेगा। नर्क के चौराहे पर खड़ा पुलिस मैंन भी उसकी गाड़ी की नहीं रोकेगा! स्वर्ग जाने का उनके सामने वह सुनहरी मौका है। प्लास्टिक के खोल के चारों ओर व बाहर आसपास भूत-प्रेत, पिशाचिनी, डंकिनी और चुड़ैलों का पहरा होगा।


खुमार संत जोन को अपने बारे में सब कुछ बता देता है। संत जोन उसे भी प्रतियोगिता में भाग लेने की आज्ञा देता है। कौन किस क्रम में जायेगा इसका फैसला ताश के पांच पत्ते खिचवा कर किया जाता है। महल में इन्टरनल टी.वी. सर्कट है संत जोन के निजी कमरे मे टी.वी. के दर्जनों स्क्रीन दीवार में फिट थे जिन पर महल के हर भाग का दृश्य बटन दबाने पर उभर आता था। सबसे पहले बारी खोलोबस की आयी, रात को खोलो बस अपने मुहिम पर रवाना हो गया, बाकी सब व्यक्ति संत जोन के कमरे में टी.वी. स्क्रीनों पर खोलोबस की प्रगति देखने लगे। बचता-बचाता खोलोबस मुख्य हाल तक पहुंच गया तभी वहां खंभे के पीछे छिपे आठ सिरों वाले भूत ने उस पर हमला कर दिया। खोलोबस ने फुर्ती से क्रॉस निकाल कर आगे कर दिया क्रॉस देखते ही भूत वहीं गिर गया तभी ठोकर लगने के कारण खोलोबस के हाथ से क्रॉस छिटक गया और मौके का फायदा उठा एक पिशाच खोलोबस पर टूट पड़ा और उसे वहीं मार दिया।
CRACK


अगली बारी काऊंटेस रसहजम की थी वह खिड़की के रास्ते अन्दर तो पहुंच गयी पर गलती से उसका पैर एक काले पत्थर पर पड़ा वह काला पत्थर वास्तव में एक डंकिनी थी। पैर पड़ते ही डंकिनी ने रस हजम का सारा तप सोख लिया और पाप के दबाव में रसहजम के चिथड़े उड़ गये। डाक्टर डुबारी को रास्ते में ही एक प्रेत से भिड़ना पड़ा, उनका सिर खंभे से टकरा गया! सर भन्नाने के कारण वह गायत्री मंत्र भूल गये और पिशाच ने नाखूनों से उसका पेट फाड़ डाला। प्रतियोगियों की यह दशा देख रोम्याऊं ने प्रतियोगिता से अपना नाम वापिस लिया। जब वह लौटने के लिये मुड़ा ही था कि पीछे से संत जोन ने उसकी पीठ पर चाकू मार दिया क्योंकि श्राप में यह अधिनियम भी था कि कोई उस मैंढ़क को बचाने का बीड़ा उठाकर हाथ खींच ले तो वह तीसरे दिन घोर नर्क में जा पड़ेगा। तीसरे दिन से पहले ही मार कर संत जोन ने उसे नर्क में पड़ने से बचा लिया।


रोम्याऊ के मरते ही संत जोन की कैंसर की बीमारी एक दम ठीक हो गयी क्योंकि रोम्याऊ को नर्क जाने से बचाने के पुण्य का फल उन्हें लग गया था । इसी बीच खुमार को सीला के बिस्तरे के नीचे हनुमान चालीस की किताब़ मिली, इससे पता लग गया कि वह भी मेंढ़क को बचाकर पुण्य लूटने के चक्कर में थी ! खुमार ने प्रतियोगिता से हटना चाहा परन्तु संत जोन ने उन्हें याद दिलाया कि हाथ खींचने का अर्थ या तो घोर नर्क में पड़ना होगा या उनके द्वारा मारा जाना क्योंकि वे उन दोनों को नर्क में जाता नहीं देख सकते थे । सीला और खुमार को मैंढ़क युक्ति निकालनी ही थी । पहले दोना ने नयी फ़सल के लहसुनों की एक सौ आठ गाठें लेकर उनका रस निकाला और उसकी सारे शरीर पर मालिश की क्योंकि ड्रैकुला फिल्म में उन्होंने देखा था कि दरवाजों तथा खिड़कियों पर लहसुन रखने पर ड्रैकुला घर में प्रवेश नहीं कर पाता है । अब भूत प्रेत उनके नजदीक नहीं आयेंगे


इसके बाद उन दोनों ने भगवान रजनीश तथा मोरार जी की किताबें संत जोन की लाइब्रेरी से उडायीं । और जोर से उसका पाठ करते हुये वह खोल में कैद मैंढ़क की ओर बढ़ने लगे । वे आचार्य रजनीश की पुस्तकें 'भोग विलास से भगवान प्राप्ति', 'सैक्स ही ईश्वर साधना है' तथा 'कैब्रे डांस में भगवान दर्शन' और मोरार जी की 'मूत्रोपचार' से चैप्टरों का ज़ोर-जोर से पाठ कर रहे थे । भूत प्रेत पिशाच व पिशाचनियों ने ऐसे अजीब धार्मिक व्याख्यान कभी नहीं सुने थे ! वे मंत्र मुग्ध होकर सुनने लगे ! इसी बीच खुमार ने उनको गाफिल पाकर मैंढ़क को आजाद कर लिया । दोनों महल से निकल भागे भूत प्रेतों को अपनी गलती का अहसास हुआ तो उन्होंने पीछा किया परन्तु वे दोनों जंगलों में उन्हें डॉज देने में सफल हो गये तथा द्वीप के तट पर आकर मोटर लॉच में बैठे । संत जोन ने उनकी भाव भीनी विदाई दी। उधर डा० डुबारी फिर जिंदा हो गये क्योंकि उन्होंने फटे पेट जोड़ने वाली देवी की सिद्धि कर रखी थी और वे द्वीप के आदिवासियों में अपने सर्व धर्भ दीन इलाही का प्रचार करने लगे । खुमार और सीला मैंढक लेकर भारत आ गये । अन्तिम समाचार मिलने तक वह अलक नंदा के लिये प्रस्थान कर चुके थे और लक्षमण झूले पर मूंगफली वाले से झगड़ा कर रहे थे ।

आपस की बातें
चचा बातूनी की कलम दवात से

केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

योगेश कुमार, अग्रवाल—डीमापुर : क्या दीवाना अंग्रेजी में भी प्रकाशित होता है ?
उ० : बहुत पहले होता था।

अवतार सिंह, 'बिट्टू'—भटिण्डा : चाचा जी यदि दुनिया की सारी औरतें पांच मिनट के लिये चुप हो जायें तो ?
उ० : दुनिया का शोर इस बात पर दुगना हो जाएगा कि ऐसी अनहोनी बात हो किस प्रकार गई।

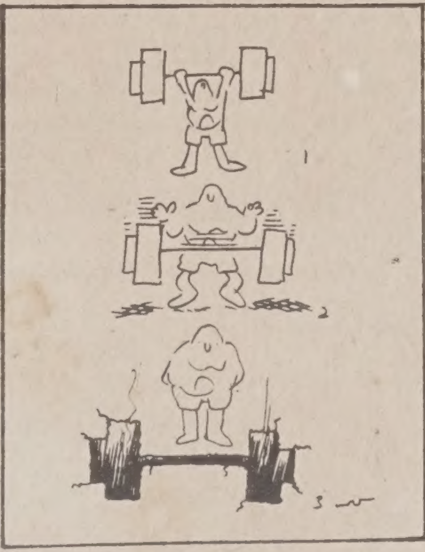
कमल कुमार खन्डूजा—मनीपुर : चाचा जी, आदमी का खून तो मीठा होता है, फिर उसका मिजाज कड़वा क्यों होता है ?
उ० : आदमी का खून मीठा नहीं, नमकीन होता है कमल कुमार जी। हम आप को यह यकीन दिलवाते हैं कि हमारा मिजाज भी नमकीन है। पर यह यकीन हम आपको कैसे दिलायें कि हम आदमी हैं।

श्याम कुमार गुप्ता—चिड़ियाघाट, गिरिडीह : यह पहाड़-सी जिन्दगी गुजारनी ही है तो आसानी से कैसे गुजारें ?
उ० : दीवाना पढ़ते रहिये। जिन्दगी ऐसे आराम से गुजर जायेगी कि आप कहेंगे :
दिन जिन्दगी के चश्मेज़दन में गुजर गये,
झौंके हवा के थे इधर आये, उधर गये।

जलील हवारी—गहवा वीरगंज, नेपाल : चाचा जी किस्मत के मारे और प्यार के मारे में क्या अन्तर होता है ?
उ० : इन दोनों का अन्तर जनता पार्टी के गद्दी से उतरे और गद्दी पर जमे दोनों प्रकार के नेताओं की हालत से पता लगता है। एक वह हैं जो किसान रैली के बाद भी प्रधान मन्त्री बनने में असफल हैं और कहते हैं :
फूल ही फूल मिले हैं उनको और कांटों पर अपना तन मन,
यह है अपनी-अपनी किस्मत, यह है अपना-अपना दामन।
और जो अपनी गद्दी से इतना प्यार करते हैं कि उसे कभी भी छोड़ने को तैयार नहीं उनके प्यार के बारे में किसी शायर ने कहा है :
उल्फत का नशा जब कोई मर जाये तो जाये,
यह दर्द मर ऐसा है के सर जाये तो जाये।

योगेश कुमार अग्रवाल—डीमापुर : चाचा जी, क्या कभी किसी ने आपका दिल तोड़ा है ?
उ० : इस बेदर्दी से तोड़ा है कि सर पर एक बाल नहीं छोड़ा है। हमारा मुंह खुशियों से मोड़ा है। उस पर जितना रोयें थोड़ा है। उसके सामने जितनी बार हाथ जोड़ा है, उतनी ही बार किस्मत को फोड़ा है। वह अब भी हमारी राह का रोड़ा है। अब यह आप खुद सोचिये कि वह कौन मुंहजोर घोड़ा है।

राजेश सिन्हा—गिरिडीह : लोग कहते हैं 'चाचा चोर भतीजा पाजी' यह कहां तक सच है ?
उ० : फिफ्टी परसेंट सच है। मतलब है जहां तक आप को देख कर कोई यह कह सकता है।



सज्जन कुमार भोर—डीमापुर : चाचा जी, आप कांग्रेस में हैं या जनता पार्टी में ?
उ० : आपके बड़े-बड़े नेताओं की तरह, जहां हलुवा माण्डा मिल रहा हो उस 'टी पार्टी' में।

आर० बी० त्यागी—इन्दौर : चाचा जी, आज हर इन्सान धनवान बनना क्यों चाहता है ?
उ० : क्योंकि धनवान बनने के बाद गरीबों की हालत पर आंसू बहाने में बड़ा मजा आता है।

भूपेन्द्र कुमार बग्गा—इन्दौर : हमारी सतरंगी एसोसीएशन ने यहां एक 'गप्पियों की महफिल' का आयोजन किया है। क्या आप उसकी अध्यक्षता के लिए यहां आने का कष्ट करेंगे ?
उ० : हम सर के बल चलकर वहां पहुंचेंगे। कहिये आपकी महफिल के लिए इससे बड़ी कोई गप्प हो सकती है।

अजय अरुण गुप्ता—तपकरा : डीयर अंकल दीवाना में हास्य सामग्री की कुछ कमी है। आप इसका कारण बतायेंगे।
उ० : कारण बताने का मतलब होगा अपनी गलती के लिए बहाना बनाना। हास्य सामग्री की अगर कमी है तो हम इस कमी को दूर करने का प्रयत्न करेंगे।

सतीन्द्र जैन—जबेरा : चाचा जी, क्या आप दीवाना के किसी फीचर में आचार्य भीम प्लासी और मथुरावासी को फिर पेश करने का कष्ट करेंगे ?
उ० : चिल्ली समय-समय पर अपने सभी जोकरों को घुमा फिराकर पेश करता रहा है। इनका नम्बर भी फिर आ जाएगा। कुछ पात्रों को लगातार इसलिए प्रकाशित नहीं किया जाता कि आप उन से बोर न हो जायें।

महेश कुमार अग्रवाल—स्योहारा : दीवाना के लिये आप किस प्रकार की कहानियां स्वीकार करते हैं। बताने का कष्ट करें ?
उ० : रोमांच, और मनोरंजन से भरपूर।

सुरेश खुराना—जीन्द : यदि आप भूतों के हत्थे चढ़ जायें तो क्या करेंगे ?
उ० : अगले चुनाव में उन्हें वोट देने का वादा कर अपनी जान छुड़वा लेंगे।

कूपन

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी बहादुर शाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली ११०००२

नया धारावाहिक उपन्यास (भाग-७)

सुबह का तारा

लेखक—संगीता

'यार, वह लड़की सीमा···!'

'मेरा विचार है वह आपको पसन्द करती हैं।'

'क्यों घिस रहे हो पार्टनर !'

'मैं सच कह रहा हूं।'

किशोर कुछ देर सोचता रहा। फिर धीरे से बोला—

'मैं सीमा से बात करूंगा। फिर आप को बता दूंगा। परसों रविवार को मिलना।'

सुशील को आये हुए चार महीने हो चुके थे। अब तक वह घर न जा सका था। इस रविवार को जाने का इरादा किया था, अब वह भी गड़बड़ दिखाई दे रहा था। उस ने यह सोचकर मन समझा लिया कि किशोर अगर यह मान गया तो रंजन के सिर पर से बहुत बड़ा बोझ उतर जायेगा।

दूसरे दिन शाम को सीमा से भेंट हुई। अभी तक सुशील उससे केवल औपचारिक बातें ही करता था। स्वर में अक्खड़पन रहता था। लेकिन आज खुशामद भरे स्वर में बातें कीं। सीमा इधर-उधर की बातें कर रही थी, तभी सहसा पूछ बैठी।



'आज शाम को आप मेरे साथ पार्टी में चल रहे हैं ?'

'चलो, कैसी पार्टी है ?'

'कल्चरल ईवनिंग कास्मोपोलिटन क्लब वालों की ओर से। आपको एक कविता सुनानी होगी।'

'मैं कविता लिखता नहीं।'

'फिर कोई रोमांटिक गीत सुना दीजिएगा।'

इन दिनों सुशील ने एक गीत लिखा था। भाव बहुत ही सुन्दर था।

'गीत सुनोगी ?'

'सुनाइये !'

'गीत का शीर्षक है—'मेरे गीतों के तरन्नुम—मेरे ख्वाबों के सनम।'

'इतना बड़ा शीर्षक ?'

'हां,' सुशील ने वही पंक्ति दोहरायी।

'इस तरह नहीं भाई, जरा गाकर सुनाइये !

सुशील को गाकर पढ़ने में झेंप लगती थी लेकिन सीमा का दिल रखने के लिए गीत सुनाने लगा। सीमा जैसे गीत में खो गयी। सुशील की आवाज में विरह की टीस थी। गीत में केवल प्रेमिका के सौन्दर्य की प्रशंसा और उसकी याद थी। उससे कहा गया था कि मैं तुम्हें अभी तक नहीं भूला हूं।

सुशील ने गीत समाप्त किया तो कमरे में सन्नाटा छा गया।

कुछ देर बाद ठंडी सांस लेकर बोली—

'आप अब तक कहां थे ? कितनी अच्छी है आपकी आवाज ! कितना प्यारा गीत है। आप इसी को सुनाइए।'

'जरूर,' लेकिन यह बताओ, तुम्हारा इस क्लब से क्या सम्बन्ध है ?'

'मैं मेम्बर हूं। बहुत बड़े-बड़े लोग इस क्लब के मेम्बर हैं।

'मैं तो सोचता हूं, अब तुम्हारी शादी कर दी जाए।' सुशील ने डरते-डरते कहा।

'किसके साथ ?' सीमा ने बिना झिझके मुस्कराते हुए कहा।

सुशील सन्नाटे में आ गया। उसे ऐसी आशा न थी। एक पल रुककर बोला—

'मुझे तो किशोर बहुत पसन्द है।'

'वह तो गधा है···डफर···!'

'अक्लमंद आदमी अक्सर दुख ही देता है।'

'अच्छा फिर सोचूंगी। आप तैयार हो जाइए।'

'तैयार क्या होना है। यह पतलून और यह बुशर्ट।'

'मौसम में ठंडक है। अच्छी सी कमीज निकाल लीजिए।'

कमीज निकालकर सुशील जैसे ही तैयार हुआ सीमा उठी और सुशील को बड़े प्यार से देखती हुई बोली—

'लाइये, मैं टाई बांध दूं।'

सुशील ने टाई उठाकर दी। सीमा ने टाई बांधी। गांठ ठीक की और फिर उसका सिर सुशील के सीने से जा लगा।

'क्या बात है ?' सुशील ने उसे थप-थपाते हुए कहा।

सीमा हट तो गयी लेकिन उसका चेहरा धुंआ-धुंआ हो रहा था, सुर्ख और शर्माया हुआ।

सुशील क्लब पहुंचा तो हॉल में रोशनी तैर रही थी। अधिक लोग नहीं थे। बीस पच्चीस आदमी और इतनी ही औरतें थीं।

सीमा को देखते ही हर मेज से आवाजें आने लगीं। सीमा सुशील को लेकर एक कोने की मेज पर चली गयी।

'प्रोग्राम क्या है ?'

'लाइट म्यूजिक, मिस मंजू का डांस, फिर आपका गीत। इसके बाद डिनर और थोड़ी देर बाद ब्रिज।'

'तुम्हारा तो कोई प्रोग्राम नहीं है ?'

'अगर आप अनुमति दे देंगे तो हो जायेगा। वैसे न तो मैं गा सकती हूं और न ही डांस कर सकती हूं। बस थोड़ा-सा ब्रिज खेलना आता है।'

'ब्रिज'··यानी जुआ ?'

'जिन्दगी ही जुआ है ! सुशील भाई !' सीमा बोली।

बात शायद आगे बढ़ती कि आर्केस्ट्रा शुरू हो गया।

बैठते ही एक बैरा सीमा की मेज के पास आया। उसके हाथों में ट्रे थी। वह ट्रे रखने लगा था कि सीमा ने आंख के

परोपकारी



बात-बे-बात की



पृष्ठ १० का शेष
इशारे से मना कर दिया।

बैठते हुए लोगों में अधेड़ उम्र के आदमी भी थे और जवान भी थे। हर वर्ग के लोग थे। एक एम० एल० ए० भी थे। एक जज साहब थे। एक वकील था तो एक आई० सी० एस० अफसर। कुछ मोटे पेट वाले बिजनैस मैन भी थे।

सबके चेहरों पर चमक थी। खुशहाली की चमक। लेकिन उन सबके माथे नहूसत से लिथड़े हुए थे—उस तख्ते की तरह जिस पर लाश रखी जाती है। इसका कारण उन के अपने जीवन की उदासी थी। यह अकेलापन इस युग की सबसे बड़ी पीड़ा है जो वासना को जन्म देती है; जो हर पल दुखी रहती है।

औरतों में शायद दो-तीन ही ऐसी थीं, जिन्हें लड़की कहा जा सकता था। बाकी सब तीस-पैंतीस की उम्र की थीं। यह भी एक मजे की बात थी कि जिसकी उम्र जितनी ज्यादा थी, वह उतनी ही छोटी उम्र की दिखायी दे रही थी। सीमा के अतिरिक्त सबके लिबास उनके बदन पर ऐसे लग रहे थे जैसे बारीक चिलमन के पीछे से झाँकते हुए दो गोरे मुखड़े।

सुशील चुप था लेकिन बड़ी दिलचस्पी से हर एक के चेहरे को पढ़ने की कोशिश कर रहा था। सीमा उसे देख रही थी।

'आज आप बिल्कुल अलग-थलग हैं।' एक सज्जन सीमा के पास आकर बोले।

हॉल में मुलाकात होगी। लेकिन ठहरिए! मैं चल रही हूं।' सीमा सुशील की ओर देखकर बोली, 'मैं अभी आयी।'

सीमा चली गई।

तभी मिस मंजू का नृत्य आरम्भ हो गया। सुशील को नृत्य में नाम-मात्र की दिलचस्पी थी। लेकिन नृत्य अच्छा था इस लिए वह कभी-कभी देख लेता था। सीमा न जाने कहाँ चली गयी थी। सुशील ने उसे एक मेज पर जाते देखा था। फिर कुछ लोग उठकर उसके साथ साइड रूम की ओर चले गये थे।

तभी नृत्य खत्म हो गया। तालियां गूंजी और सब लोग उठने लगे। सुशील भी उठ खड़ा हुआ। उसने निश्चय कर लिया कि जिधर सब लोग जायेंगे, वह भी उधर ही चला जाएगा।

सुशील को लगा जैसे कुछ लोग पहले ही उठ गये हों। कुछ स्त्रियाँ और कुछ पुरुष दिखाई दे रहे थे।

लम्बे कॉरीडोर से गुजरते हुए जब वह हाल के पास पहुंचा तो क्लॉक रूम से लगा एक बड़ा-सा कमरा दिखायी दिया, जिस पर पर्दा पड़ा हुआ था। अन्दर से कहकहों की आवाजें आ रही थीं। पर्दे के दोनों ओर जरा-जरा सी जगह थी, जिससे अन्दर की ओर का एक दृश्य देखा जा सकता था। सुशील कनखियों से देखने लगा।

कमरे में कई लोग थे। उनमें सीमा भी थी। एक साहब एक औरत को गोद में उठाने की कोशिश कर रहे थे। औरत की साड़ी ढलक कर फर्श पर आ रही थी। लोग हँस रहे थे।

सुशील का जी चाहा कि आवाज देकर सीमा को बुला ले या अन्दर चला जाय। लेकिन वह कुछ सोचकर आगे बढ़ गया।

तभी उसे सीमा की आवाजें सुनाई दीं। वह उसे बुला रही थी।

सुशील ने उसके पास आकर पूछा—

'कहाँ रह गयी थीं?'

'यूं ही जरा…!' सीमा बोली। उस के साँवले चेहरे की दमक और बढ़ गई थी। लगता था जाड़े की ठंडी रात में अँगीठी में कोयले दहक रहे हों। बिल्कुल सुर्ख। उसके होंठ फड़फड़ा रहे थे।

उसने बड़ी बेतकल्लुफी से सुशील का हाथ थामकर कहा—

'चलिए!'

'कहां?'

'गीत न सुनाइएगा?'

'चलो!' सुशील बोला और कमरे में आ गया।

सर्किल टेबुल पर सीमा के समेत सात स्त्रियाँ और सात पुरुष हो गए। सुशील के आने पर पुरुषों की संख्या आठ हो गयी।

'आइए सुशील साहब!' एक सज्जन बोले, 'हम लोग तो आप ही की प्रतीक्षा कर रहे थे। वह गीत जिसकी प्रशंसा में मिस सीमा ने धरती आकाश के कुलाबे मिला दिये थे…!'

सुशील ने देखा सभी बुजुर्ग दिखाई दे रहे थे। स्त्रियाँ बड़ी प्यासी नजरों से उसे देख रही थीं। बल्कि घूर रही थीं। सुशील जैसे ही बैठा एक लड़की उसकी कुर्सी के हत्थे पर आ बैठी और बड़ी अदा से बोली—

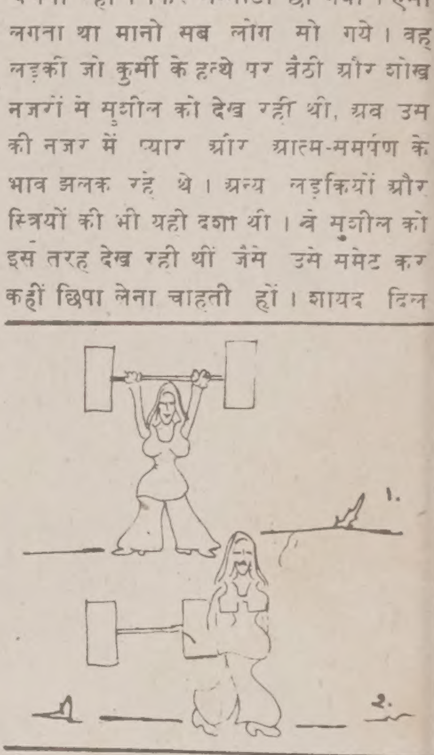
'अब सुनाइये।'

'गीत सुनाऊँ या इस गीत को देखें जो मेरे सिर पर सवार हो गया है?' सुशील ने बड़ी बेबसी से कहा।

कुछ लोग हँस पड़े। कुछ मुस्कराये, लेकिन वह लड़की बड़ी ढिठाई से बैठी रही। उसने मुस्कराकर कहा—

'दोनों काम कीजिए।'

सुशील जल्द से जल्द छुटकारा पाना चाहता था। उसने गीत शुरू किया। दो तीन पंक्तियों तक तो लोगों में खुसर-पुसर चलती रही। फिर सन्नाटा छा गया। ऐसा लगता था मानो सब लोग सो गये। वह लड़की जो कुर्सी के हत्थे पर बैठी और शोख नजरों से सुशील को देख रही थी, अब उस की नजर में प्यार और आत्म-समर्पण के भाव झलक रहे थे। अन्य लड़कियों और स्त्रियों की भी यही दशा थी। वे सुशील को इस तरह देख रही थीं जैसे उसे समेट कर कहीं छिपा लेना चाहती हों। शायद दिल



के अन्दर।

गीत समाप्त हो चुका था फिर भी कुछ पल तक सन्नाटा छाया रहा। फिर एकदम पहले तालियाँ बज उठीं और वाह-वाह के शोर से कमरा गूंजने लगा।

सुशील ने पलटकर देखा तो दरवाजे के पास के लोग भी खड़े थे जो पहले नहीं आये थे। सुशील से फरमाइश की जा रही थी। 'एक और गीत सुनाइये' की फरमाइशों की आवाजों से विवश होकर सुशील को एक गीत सुनाना पड़ा।

'सुशील जी! अब तक आप कहाँ थे?' एक लड़की ने बहुत ही इठला कर कहा।

'आपके दिल के किसी कोने में ऊँघ

रहा था। आप न देखें तो मेरा क्या दोष ?' सुशील ने हँसकर कहा।

वह लड़की झेंप गयी और लोग हँसने लगे।

तभी बैरा ट्रे लेकर आया। लोगों ने बोतलें खोलीं। गिलास भरे और चुस्कियाँ लेने लगे।

एक महिला ने सुशील की ओर देखते हुए बड़ी अदा से पूछा. 'आप क्या पियेंगे ?' 'कुछ नहीं' 'ठंडा पानी मँगवाया जाये, आपके लिए ?'

'उसकी जरूरत तो आपको है।' सुशील ने कहा।

एक कहकहा गूंज उठा।

जब कहकहा रुका तो एक सज्जन ने सीमा से पूछा—

'भई अच्छा नहीं लग रहा। कुछ तो पियो।'

'मैं कोका कोला मंगवा रही हूं।' सीमा बोली। और एक बैरे की ओर देखने लगी।

बैरा जल्दी से चला गया और दो गिलास ले आया।

सुशील को शराब के सारे नाम मालूम थे। बहुत-सी शराबों की बोतलें भी देखी थीं। लेकिन शराब के जायके से परिचित न था। उसे पता न चल सका कि सीमा उसे कोका कोला के बजाय रम पिला रही है। वह एक-एक घूंट करके पीता चला गया। उसे कोका कोला में कुछ कड़वाहट-सी महसूस हो रही थी। उसने मुँह बनाकर सीमा की ओर देखते हुए कहा—

'अजीब जायका है।'

'स्पैशल है डार्लिंग।' एक महिला बोली।

आधा गिलास खत्म करते-करते सुशील की हालत अजीब सी हो गयी। सिर में एक अजीब सी धमक महसूस होने लगी। साथ ही बदन में एक ऐसी गुदगुदी होने लगी जिससे वह अब तक अनभिज्ञ था। सारा वातावरण उसे घूमता हुआ नजर आ रहा था—कुछ धुंधला-धुंधला सा।

खाना खाने के बाद उसने भर्राए स्वर में सीमा से कहा—

'अब चलो !'

लेकिन सीमा कुछ कहने के बजाय हँसने लगी।

ताश का खेल हो रहा था। सीमा कहीं बैठी हुई थी। ऐसी हालत में वह देख नहीं सकता था।

अचानक कुछ लोग उठे। और उनके साथ कोई न कोई स्त्री भी थी।

सीमा उसके पास आयी। उसने सुशील की जेब में हाथ डालकर चाबी निकाल ली।

'मैं···म···म···मैं···घर···घर···कैसे ···जाऊँगा !' सुशील ने हकला कर कहा।

सीमा ने कहकहा लगाकर उस लड़की से कहा जो सुशील की कुर्सी के हत्थे पर आ बैठी थी।—

'डियर निमी ! तुम इसे अपने साथ ले जाओ। दो बजे तक इसे घर पहुंचा देना। और अपने साहब को वहां से ले जाना।··· पन्द्रह कर्जन रोड।''

सुशील भी लड़खड़ाता हुआ उठा। वह सीमा के साथ जाना चाह रहा था। वह यह नहीं समझ पा रहा था कि उसके बदन में थरथरी क्यों है। वह अपने वश में क्यों नहीं है ? फिर वह जैसे ही उठा उस लड़की ने उसका हाथ अपने हाथ में लेकर अपनी ओर खींचते हुए कहा—

'आओ, मेरे साथ चलो !'

'तोम···मैं···तोमारे···साथ···नहीं



जाऊंगा।'

'फिर कहाँ जाओगे ?' वह अपने साथ उसे घसीटती हुई ले गयी और वह बुरी तरह से ऊब कर बेबस-सा चला गया।

उसे कुछ ऐसा लगा जैसे उसके सारे बदन में आग की जलन हो रही हो। मेदे में जैसे अंगारे भर दिये गए हों। उसे भूख लग रही थी।

'मुझे कहाँ ले जा रही हो ? मुझे भूख लगी है।' सुशील ने हकला कर कहा।

'चलो तो···मैं तुम्हें कुछ चीज खिलाऊंगी।'

'क्या खिलाओगी ?'

'डबल रोटी और मक्खन !' उसने कहकहा लगा कर कहा और सुशील को लेकर कार की पिछली सीट पर जा बैठी। ऊंघते हुए ड्राइवर ने कार स्टार्ट की।

ठंडी हवा के झोंके दिमाग को शांति प्रदान कर रहे थे। विचित्र-सा नशा मस्तिष्क पर छाने लगा। नींद की दशा ऐसी थी जिसमें न कोई सोता है और न जागता है।

वह लड़की उसे अंधाधुंध प्यार कर रही थी। सुशील ने एक बार विरोध भी किया था। अपने आपको छुड़ाना भी चाहा था। लेकिन फिर वह बेसुध होता चला गया था।

उसे कुछ याद नहीं था कि वह कहाँ-कहाँ रुकी। वह कैसे उतरा और कमरे तक कैसे आया। वह कमरा कैसा था ?

उस कमरे में एक मसहरी थी जिस पर डनलो-पिल्लो के गद्दे थे। उसे रह-रह कर यही अहसास हो रहा था कि वह भूखा है।

उसने हिचकियाँ लेते हुए कहा—

'मैं भूखा हूँ।'

'अभी डबल रोटी और मक्खन मिलता है।' लड़की ने हंसते हुए कहा, और सुशील के गले में बाँहें डाल दीं।

वातावरण में गुनगुनाहट थी और रात झूम रही थी।

ऊंची बुर्जुआ सोसाइटी का शानदार, चमकीला और भड़कीला वातावरण पेंग ले रहा था। कौन कहता है कि भारत में लोग फारसी कम जानते हैं। सभी तो उमर खैयाम की अवैध संतान दिखायी देते हैं। रोटी···

शेष पृष्ठ ३८ पर



आपने पिछले अंक में पढ़ा कि रूबी, सिलबिल और गरीबचन्द पिकनिक पर जाते हैं । वहां उन्हें एक दैत्याकार मकड़े की उपस्थिति का पता लगता है । मकड़े का नाम ऊकापोंगा होता है । ऊकापोंगा और सिलबिल में भयंकर युद्ध होता है । युद्ध में ऊकापोंगा सिलबिल को मार-मार कर तहसीलदार बना देता है । रूबी और गरीबचन्द सिलबिल को स्ट्रेचर पर लादकर घर लाते हैं और मरहम पट्टी करते हैं । उससे आगे की कहानी······
लगता है इस ऊकापोंगा मकड़े की मौत आई है जो वह मुझसे उलझ पड़ा । कहते हैं जब गीदड़ की मौत आती है तो शहर की तरफ भागता है । अभी तो लड़ाई की शुरूआत ही हुई है आगे-आगे देखना क्या होता है ?
मेरे ख्याल से तो लड़ाई की शुरूआत अभी हुई ही नहीं । लड़ाई उसे कहते हैं जिसमें दो पक्ष एक दूसरे पर वार करते हैं । यहाँ तो अब तक एक ही तरफ से वार हुए हैं तूने तो उसे एक चांटा भी नहीं मारा, वही डमाडम तेरा तबला बजाता है
भगवान के लिए अब और उससे लड़ने मत जाइये ! मुझसे देखा नहीं जाता । ताकत से वह काबू नहीं आने वाला
बनकर उससे लड़ने जाऊँगा । लगाऊंगा कि नानी याद आ जायेगी, नानी ही क्या नानी ने कोई बकरी या बिल्ली पाल रखी हो वह भी याद आयेगी । उसके जबड़ों पर में खोपड़ी के निशान ऐसे छोड़ जाऊंगा । जैसे बैरंग गलत ऐड्रेस वाले लिफाफे पर पोस्ट आफिस वाले मोहरें छोड़ जाते हैं ।
तो फिर ठीक है आज में स्कोर बोर्ड लेकर साथ चलता हूं ! जिस तरह ओलम्पिक खेलों में ग्रीको रोमन तथा फ्रीस्टायल कुश्तियों में स्कोरिंग होती है उसी तरह होगी ! नियम भी सारे वही लागू होंगे । रूबी अम्पायर का काम करेगी । स्कोरिंग की जिम्मेवारी में सम्भाल लूंगा ।
ओ. के.
0 UKA 0
V/S
SIL
SCOREBOARD


हा हा हा हा हा वह रहा ऊकापींगा का बच्चा ! अच्छा मौका है, यह उसकी पीठ मेरी तरफ है में……
मैं ऊँची जगह से हवा में तैरता हुआ जेगुआर एयरक्राफ्ट की तरह ग्लाइडिंग टैकनीक से गर्दन दबोच लूंगा और उसके बाद दमादम दमादम ।
उस कनखजूरे ने यहीं आने के लिए कहा था कहाँ मर गया ? उसकी इन्तजारी में मैं ग्यारह बीड़ियां पी गया । डर गया होगा । पिछली बार की मार अब तक उसके जिस्म में टीस उठा रही होगी ।
BURNOL
सिलबिल का हाथ ऊकापींगा की जलती बीड़ी पर पड़ जाता है ।
ऊई मां जल गिया मेरा हाथ
ठहरो ऊकापींगा साहब, इसका हाथ जल गया है ! हमारे खंडारी को चोट आई है । पहले मैं इसके हाथ पर बरनाल लगाता हूं, फिर लड़ना ! अम्पायर ने टायम आऊट लिया है ।
RRR
पहले मैं टो के सहारे इस कद्दू को जमीन से दो फुट ऊँचा उछालूंगा और फिर··
फिर एक जोरदार किक···बैलूनिंग इन दि एयर
FOOT BALL IT
PELE
PUK


में···में···में···हवा में कैसे झूल रिया हूं ? मेरे पांव जमीन पर क्यों नहीं पड़ रिहे हैं ? तो क्या क्या···मैंने ऊकापौंगा को पीट दिया ? जभी तो देवताओं ने मुझे हवा में उठा रखा है ! फूलों की वर्षा ! देवताओं का जै-जैंकार धन्य है ऐसी माना जिसने सिलबिल जैसा वीर सपूत पैदा किया । कानों में सीटियां बज रही हैं । शायद परियां सीटी बजा कर हीरो सिलबिल का अभिवादन कर रही हैं ।
BOARD
यह बाजे तो आपके अपने बज रहे हैं
तुम दो खड़े मेरा मुंह क्या देख रहे हो? जाओ···जाओ ऊकापौंगा की अर्थी उठाने का प्रबन्ध करो, वह उधर मरा पड़ा होगा । जल्दी करो । निगमबोध घाट वालों को टेलीफोन करो ।
ऊकापौंगा तो खड़ा बीड़ी पी रहा है और अमर अकबर एंथनी का गाना गा रहा है ।
आप अपने आपको संभालिए और जरा होश की बात कीजिए । ऊकापौंगा पर केवल अक्ल के जोर से विजय प्राप्त की जा सकती है । अक्ल आदमी का सबसे बड़ा हथियार है !
हां अक्ल आदमी का सबसे बड़ा हथियार है । इस वक्त मेरा सिर भन्ना रहा है ! मैं ठीक तरह सोच नहीं पा रहा हूं जरा बताओ तो अक्ल कहां होती है ?
अक्ल आदमी की खोपड़ी में होती है ।
तो फिर ठीक है मैं अक्ल समेत अपनी पूरी खोपड़ी ही इसके पेट में दे मारता हूं । अक्ल में पहाड़ तक को उड़ा देने की ताकत होती है देखना इसका कैसा मलीदा बन जायेगा ! हा हा हा हा ! !
ZING!



पिलपिल-सिलबिल के नये कारनामे ग्रगले ग्रंक में पढ़िये।

आपके पत्र

प्रसन्नता का खजाना, दीवाना का अंक ४१ मिला, मुख पृष्ठ देखते ही मुस्कराये बिना न रहा। चिल्लो लीला, परोपकारी मोटू-पतलू, पंचतंत्र, बच्चा झमूरा तथा कहानी 'नौकरी के चक्कर में' पसन्द आयी, लेखक को बधाई, आजकल दीवाना उत्कर्ष की चरम सीमा पर है। अगले अंक के इन्तजार में। **मुहम्मद जुबैर फरीदी—बिलारी**

हास्य व्यंग्य की सर्वोत्तम पत्रिका दीवाना का अंक ४१ प्राप्त हुआ। जब इस पत्रिका की कीमत ३० पैसे थी तब से मैं उसका नियमित पाठक हूं। इस अंक के 'खेल-खेल में' स्तम्भ में लिखा गया है कि कराची में गवास्कर ने १११ एवं १३० रन बनाये। पहली पारी में गवास्कर ने जरूर १११ रन बनाये परन्तु दूसरी पारी में उन्होंने १३० रन नहीं बलिक (१३७ रन) बनाये।
वीरेन्द्र कुमार सिंह 'पयोधी'—जमशेदपुर

आपका मत ठीक है। गवास्कर ने १३७ रन ही बनाये थे। सं०

अंत में मिल ही गया जिसका हमें काफी दिनों से इन्तजार था, यानि कि दीवाना का अंक नं० ४१। इस अंक में सभी सामग्री ही बधाई की पात्र थी। विशेष रूप से बच्चा झमूरा व चिल्ली लीला के कारनामे बहुत ही मजेदार थे। 'पद्मा खन्ना' पर लेख भी काफी रोचक लगा। अगर आप दीवाना में 'साप्ताहिक भविष्य' की जगह कोई नई चीज शुरू कर दें तो आप का बहुत-बहुत धन्यवाद।
राज दीपक 'स्नेही'—सिरसा

दीवाना का आरामदायक व हास्यप्रद अंक नं० ४१ मिला ! इसमें चिल्ली का चौधरी चरण सिंह के नाम प्रेम पत्र पढ़ा, मजेदार लगा ! 'खेल खेल में' स्तम्भ के अन्तर्गत 'सुनील गवास्कर' के बारे में आपने इतनी जानकारी दी इस हेतु धन्यवाद ! और अन्य हास्यप्रद स्तम्भ—जैसे मोटू पतलू, पिलपिल-सिलबिल, पंचतंत्र, चिल्ली लीला व परोपकारी ने भी खूब हँसाया। दीवाना फीचर 'हमारे क्रिकेट कामेन्ट्री के दीवानगी के प्रमाण' ने भी हँसा-हँसाकर पेट में दर्द कर दिया है।

प्रथम पृष्ठ से अन्तिम पृष्ठ तक हँसाने वाली कोई पत्रिका है तो वह है 'दीवाना'।
किशोर नारंग—इंदौर

दीवाना का हर अंक चटपटा, मसालेदार, मनोरंजक, शिक्षाप्रद तथा हास्य-व्यंग्य से भरपूर होता है। सम्पादक जी, पता नहीं क्या बात है कि इतने पाठक आपसे कहते हैं कि 'पाठकों के चुटकुले' या 'पाठकों के कार्टून' नामक स्तंभ शुरू कर दीजिए। परन्तु आप शुरू ही नहीं करते। इसका मतलब ये हुआ कि आप पाठकों की पसंद तथा नापसंद का बिल्कुल ख्याल नहीं रखते।
अवतार सिंह—भटिण्डा

यह बात नहीं है। पाठकों की पसन्द का हम हमेशा ध्यान रखते हैं। आपकी बात पर भी शीघ्र ही विचार किया जायेगा ? —सं०

चिल्ली साहब को ७७-७८ को खाई में फेंकते देख मैं पीछे हट गया। परन्तु चिल्ली बोला, 'डरो मत रमेश भाई, तुम्हारी बारी नहीं आएगी अभी।'

इसके बाद तो उसने अपनी लीला, फिल्म पैरोडी में कुरसी तेरे आंगन की, नए वर्ष के संकल्प, परोपकारी, पिलपिल-सिलबिल, मदहोश, पंचतंत्र, बन्द करो बकवास आदि से मेरा इंट्रोडक्शन कराया।

सुबह का तारा की दूसरी किश्त भी अच्छी रही। कृपया बताएं कि फ्रेंड्स क्लब में फोटो लगभग कितने दिन में छप जाता है ?
रमेशचन्द्र—अनौली

यह तो लाईन की लम्बाई पर निर्भर करता है। —सं०

दीवाना अंक ४३ मिला मुख पृष्ठ काफी अच्छा था। आपको हमारी तरफ से नये साल की बधाई। दीवाना की सारी सामग्री हास्य प्रद थी। घसीटाराम व पिलपिल-सिलबिल अच्छे रहे। बाकी सभी कहानियां व लेख काबिले तारीफ थे। हमें आशा है, दीवाना हमारा मनोरंजन करता रहेगा। बाकी सारे फीचर अच्छे थे। आशा है अगला अंक भी रोचक होगा। **जुबेर अहमद—दिल्ली**

मैं दीवाना का पांच मास से दीवाना हूं। उसका हर अंक एक से बढ़कर एक होता है। न जाने मुझे इससे इतना प्यार क्यों है ? हमारे शहर सिरसा में (दीवाना) बहुत देरी से पहुंचता है। प्रिय सम्पादक जी, मैं आपसे निवेदन करूंगा कि आप दीवाना जल्द से जल्द भेजने की कोशिश करें।
गुलशन कश्मीर—सिरसा

हम पूरी कोशिश कर रहे हैं कि दीवाना हर पाठक तक समय पर पहुंचे। —सं०

दीवाना वैसे तो एक अच्छी पत्रिका है पर इसमें ज्यादा प्रतियोगिताएँ नहीं होतीं। आप 'रंग भरो' प्रतियोगिता हर अंक में दें। काका के कारतूस में भी आप अच्छे प्रश्न पर पुरस्कार रखिये। आपस की बातें में भी कुछ इनाम रख सकते हैं। आप 'कहानी और कविता' की भी प्रतियोगिता रख सकते हैं। और आपकी पसंद में चुटकुले भी रख सकते हैं। मैं आपसे यह कहना चाहती हूँ कि अगर आप प्रतियोगिताएं रखेंगे तो आपकी ज्यादा बिक्री होगी। बच्चे आप की दीवाना बड़े चाव से खरीदेंगे।

मेरी आपसे एक और शिकायत है कि आप 'आपके पत्र' में आए हुए पत्रों के जवाब नहीं देते। **मधुरीता शर्मा—दिल्ली**

शीघ्र ही कई और नई प्रतियोगितायें शुरू की जा रही हैं। —सं०

अंक नं० ४१ पढ़ा, यह कहने की आवश्यकता नहीं कि कितना पसंद आया, हां ! इतना अवश्य कहूंगा, कि आपकी मेहनत और लग्न गहरा रंग लाई थी। 'दीवाना' में त्रुटियां खोजना असम्भव-सा लगता है, मैं एक सुझाव भेज रहा हूं, 'दीवाना' के कई पाठकों ने आपसे यह अनुरोध किया है, कि आप अभिनेता-अभिनेत्री के फोटो छापने के बजाय किसी खिलाड़ी का परिचय देकर फोटो प्रकाशित करें और आपके सामने यह समस्या है कि अधिकांश पाठक अभिनेता-अभिनेत्री के फोटो पसंद करते हैं, तो आप ऐसा कीजिये, किसी अंक में अभिनेताओं का फोटो प्रकाशित करें तथा अगले अंक में खिलाड़ी का, दोनों पाठकों को प्रसन्नता होगी।

दीवाना को शुभ कामनायें।
मनोज, संजय—हजारी बाग

मोटू-पतलू

इस फिल्म में काम करने वाले सितारों के नाम हैं :



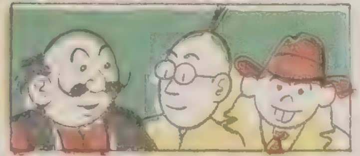
डाक्टर झटका और कम्पाउन्डर नैन सुख,



घसीटा राम, जो प्लास्टिक सर्जरी से डाकू जैसा बना हुआ है



डाकू मूंछ बहादुर, जो घसीटा राम जैसा बन गया है।



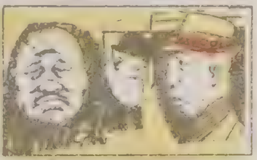
मोटू-पतलु, डिटैक्टिव चेला राम, अंगूठा नन्द,



भाई छछून्दर, अकलमंद उल्लू,



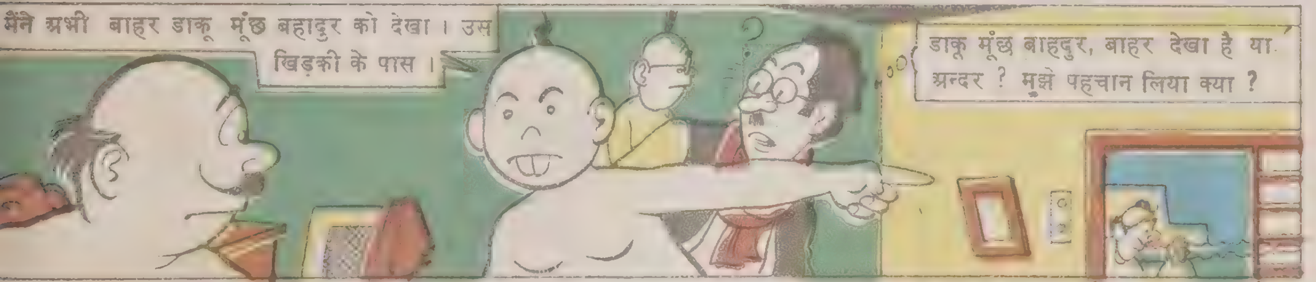
इन्सपैक्टर कुमार,



और डाकूओं का पूरा गैंग।

पिछले दिनों डाक्टर झटका और उसके कम्पाउन्डर नैन सुख ने प्लास्टिक सर्जरी का कमाल दिखा कर घसीटा राम की शक्ल डाकू मूंछ बहादुर जैसी बना दी थी। और डाकू मूंछ बहादुर को घसीटा राम जैसा बना दिया था और वह डाकू घसीटा राम बन कर मोटू-पतलू के घर पहुंच गया था। डाकू के पास एक मन्दिर से चुराया कीमती हीरा था जिसे उसने भाई छछून्दर के थैले में छुपा दिया था। वह हीरा चेला राम के छोटे मित्र अंगूठा नन्द ने थैले से बाहर निकाला था और उसकी कमर से फिसल कर डाकू की जेब में जा पड़ा था। डाकू ने वह हीरा हर जगह खोजा था। पर यह बात उसके दिमाग में सपने में भी नहीं आ सकती थी कि जिस हीरे को वह दूसरों की जेबों में तलाश कर रहा है वह उसकी अपनी जेब में पड़ा है।

डाकू मूंछ बहादुर को पकड़ने की योजना बनाने के लिए इस समय पुलिस इन्सपैक्टर कुमार मोटू-पतलू के घर आ कर डिटैक्टिव चेला राम से मिलने वाले हैं। घसीटा राम बना हुआ असली डाकू मूंछ बहादुर वहां उपस्थित है। वह हीरा छोड़ कर वहां से भाग भी नहीं सकता। और घसीटा राम, जिसे अब तक जरा भी शक नहीं था कि प्लास्टिक सर्जरी द्वारा उसकी शक्ल डाकू जैसी बना दी गई है, मोटू-पतलू की खुसर-फुसर सुनने के लिये उनके मकान की खिड़की के पास पहुंचा हुआ है। घसीटा राम खुद भी डाकू पकड़ने के चक्कर में है।









यहां डाकू मूंछ बहादुर था ? यहां तो कोई नहीं है ।
हां कोई नहीं है । कभी-कभी तो यह दांतों वाला चूहा बिल्कुल ही उल्लूओं जैसी बातें करने लगता है ।
गली में अकेली जगह पर वह घसीटा राम के कान में बड़ी राजदारी की बातें बता रहा था ।
तुम थे कहां सरदार ? हम कब से तुम्हें खोज रहे हैं । तुम्हारे पीछे से गजब हो गया और जेल तोड़ कर भागने के बाद तुम अड्डे पर पहुंचे ही नहीं । हमने पिछले दिनों सेठ धौलू मल के यहां डाका डाला तो पता नहीं किस ने पुलिस को मुखबरी कर दी ।
उस डाके में छोटा सरदार मक्खन सिंह पकड़ा गया था । इस डर से कि वह पुलिस के सामने सब कुछ उगल न दे मैंने एक रोज हवालात में जा कर उसके गोली मार दी ।
उसके गोली मार दी ?
गोली न मारता तो और क्या करता । जब तुम जेल में थे तो उसने तुम्हें गोली मारने का प्लान बनाया था । उसने मुझसे कहा था, लहरी सिंह, अब किसी भी तरह जेल में घुस कर मूंछ बहादुर को गोली से उड़ाना होगा । वह पुलिस को हमारे ठिकानों के बारे में सब कुछ बता न दे । पुलिस के हाथ आये हमारे हर साथी का अंजाम यह होता है ।
अरे तू तरावड़ी के घाट मारा गया मोतियों वाले घसीटा राम । यह पता नहीं क्या समझ कर क्या कहे जा रहा है । जेल की बात तो सच्ची है । जेल तो मैं अभी पिछले दिनों फ्लाईंग डिटैक्टिव बनने पर गया था ।
अब तुम जेल से बाहर आ गये हो सरदार, तो समझो सब मुश्किलें आसान हो गईं । बैंक लूटने की योजना में जो कमी है वह अब पूरी हो जाएगी । आओ मेरे साथ । अपने अड्डे पर चलें । वहां गली के मोड़ पर मेरी गाड़ी खड़ी है ।
गैंग के सब साथी तुम्हें अपने बीच पा कर बहुत खुश होंगे



...क लूटने की पूरी योजना तैयार है । हर चीज के टाईमिंग ...ट हो गये हैं । कब हमारी गाड़ी बैंक के गेट पर पहुंचेगी, ...क के गन मैन को गोली से उड़ाया जाएगा । टेलीफोन की ...ाईनें काटी जाएंगी । फिर हवाई फायर होंगे । हमारा ...ादमी खज़ांची से नोटों के बंडल लेकर अपने बैग में भरेगा । और हम हवा में फायर करते हुए रफूचक्कर हो जाएंगे ।
कितने ही खतरनाक रास्तों से होती अब उनकी गाड़ी डाकुओं के अड्डे पर पहुंच गई थी ।
बस एक बात की कमर है कि कहीं भी हमारी स्कीम फेल हो गई और नोटों को बैंक से लेकर भागने वाला हमारा साथी पुलिस के हत्थे चढ़ गया तो उसे खुद अपने गोली मार कर आत्महत्या करनी होगी । नहीं तो हम गोली मार कर उसे समाप्त कर देंगे । इसी बात पर सब साथी तुम्हें याद कर रहे थे । सब का एक ही मत है कि इस प्रकार मौत से खेलने वाला वीर सरदार मूंछ बहादुर के अलावा और कोई नही हो सकता ।
...ड्डे पर पहुंचे तो सब डाकुओं ने घसीटा राम का जोरदार स्वागत किया
अब हमें सफल होने से कोई नहीं रोक सकता ।
हमारा सरदार अमर रहे ।
वीर मूंछ बहादुर की जय ।
जिस वीर सरदार की कमी थी, वह पूरी हुई ।
सरदार मूंछ बहादुर बैंक लूटने के इस डाके में सबसे आगे रहेंगे ।


पर हमें विश्वास है कि यह नौबत नहीं आयेगी। हमारा यह डाका सफल रहेगा और अगर हमारे दुर्भाग्य में असफलता लिखी है तो हमें विश्वास है कि सरदार खुद अपने गोली मार कर आत्महत्या कर लेंगे। हम इनके गोली मारें, यह नौबत नहीं आएगी।
मुरली वाले घसीटा राम, इनसे कह दे यही नौबत आयेगी।
सरदार को पिस्तौल दो झिगर सिंह। यह जेल से निकल कर आये हैं। इनके पास कोई वैपन नहीं है। हमारे सरदार को कभी भी निहत्था नहीं रहना चाहिये।
दे रहा हूं काड़ सिंह। लो सरदार, यह पिस्तौल रख लो जेब में।
चलो सरदार, अब मैं तुम्हें बैंक की सिचुएशन समझा दूं। यह पहन लो ताकि कोई तुम्हें पहचान न सके।
पहले तुम बैंक के अन्दर घूम कर यह देख आओ कि वहां खिड़कियां और दरवाजे कहां-कहां हैं। मैं तुम्हें बैंक के पास उतार दूंगा और एक घंटे बाद वहीं से ले जाऊंगा।
योजना के अनुसार घसीटा राम को बैंक के बाहर उतार दिया गया।
यह क्या चक्कर है? मैं डाकू पकड़ने चला था और खुद डाकुओं का सरदार बन गया। पता नहीं यह क्यों मुझे अपना सरदार समझ रहे हैं।
पर घसीटा राम बैंक के अन्दर जाने की बजाय मोटू-पतलू के घर के रास्ते की ओर चल दिया।
वाह रे ऊपर वाले! तेरी भी लीला निराली है। तुझे किसी भी आदमी को काम का आदमी बनाने का धेले का तजुर्बा भी नहीं है। बैंक के अन्दर कौन झक मारे! मरने दो इन डाकुओं को।


मैं मोटू-पतलू को बताऊंगा जिसे वह घसियारा भी नहीं
बनने का बीस साल का तजुबा है।
अब तक इंस्पैक्टर कुमार मोटू पतलू के यहां पहुंच गया था। घसीटा राम बने असली डाकू ने अपनी जाकेट उतार कर कुर्सी पर लटका दी थी और वह चेला राम का कोट पहन
घसीटा राम वहां पहुंचा तो उसने डाकू की उतारी वह जैकेट पहन ली जिस की जेब में कीमती हीरा पड़ा था।
यह क्या चक्कर है? मेरी नकल की यह डुप्लीकेट कापी कहां से आ गई।
ए मोटू! तू क्या लल्लू पंजू समझता है मुझे। मैं फन्ने खां डाकू सा नहीं लग रहा हूं क्या?
मूँछ बहादुर डाकू! खुद चल कर यहां आ गया।
पकड़ लो इस करेले की दुम को।
क्या कर रहे हो? वास्तव में मैं डाकू नहीं हूं। मैं तो मजाक कर रहा हूं।
डाकू मूंछ बहादुर ही है। धोखा दे रहा है।
मैं घसीटा राम हूं।
बीस साल के तजुर्बे में ऐसा अनर्थ कभी नहीं हुआ जैसा अब हो रहा है।
अच्छा यही है कि मैं अब खिसक लू यहां से।



वह है डाकू मूंछ बहादुर । उस खिड़की से परे ।
कोई तुम्हें उल्लू कह देगा तो मुझे गाली लगेगी । वह खिड़की नहीं है शीशा है जिसमें तुम अपनी शक्ल देख रहे हो ।
वह मेरी शक्ल है, तो क्या मैं डाकू हूं ? नहीं-नहीं। मैं घसीटा राम हूं । डाक्टर झटका ने अपनी प्लास्टिक सर्जरी से मुझे ऐसा बना दिया होगा । डाकूओं का ठिकाना तो मुझे पता है । मैं अभी-अभी वहीं से आ रहा हूं । मैं उन्हें पकड़वा सकता हूं चलो मेरे साथ ।
अपने ठिकाने पर ले जा रहे हो ? चलो ।
पुलिस की एक गारद ले कर सब घसीटा राम के बताये रास्ते पर डाकूओं के ठिकाने की ओर चल दिये ।
बस, गाड़ी रोक दो ।
यही वह जगह है, जहां सब डाकू हैं । मुझे एक बार देखी जगह को दोबारा पहचानने का बीस साल का तजुर्बा है—
उस समय डाकूओं के अड्डे पर असली डाकू मूंछ बहादुर पहुंचा हुआ था और वहां कुछ और ही चक्कर चल रहा था ।
मैं फिर कह रहा हूं कि मैं तुम्हारा सरदार मूंछ बहादुर हूं । तुम्हें हो क्या गया है ?
हमें यह हो गया है ।


अपने सरदार पर हाथ उठाया ! मैं तेरी खाल में भुस भर दूंगा ।
तभी वहां पुलिस पहुंच गई ।
और सब डाकू पकड़े गये ।
सरदार मूंछ बहादुर अपने ही साथियों को पकड़वाने के लिये पुलिस ले आया, यह चक्कर क्या है ?
यह घसीटा राम है, इसे क्यों पकड़ लिया ?
आदमियों की तरह बोलना सीख कर भी उल्लू का उल्लू ही रहा । अरे उसने मेरा भेस बदल रखा है । असली घसीटा राम मैं हूं, मुझे इनाम मिलेगा डाकू पकड़वाने की खुशी में ।
जी नहीं । आपको भी हवालात की हवा खानी पड़ेगी उस समय तक के लिये, जब तक यह पता न लग जाए कि वास्तव में तुम कौन हो ।
जरा इसकी तलाशी तो ले कर देखो । पता लग जाएगा यह कौन है ?
देखना क्या है इसकी जेब में ?
तेरा सिर है अकलमन्द की दुम ।
?



यह हीरा निकला है जेब में से जो मंदिर से उड़ाया गया था ।
और इस जेब ने तो इसका भांडा ही फोड़ दिया है ।
यह पिस्तौल निकली है इस जेब में से । अब कहो जरा कि तुम डाकू नहीं हो ।
मुझे नहीं पता यह होरा मेरी जेब में कैसे आया । यह पिस्तौल मुझे डाकुओं ने दी थी
तुम्हारे साथियों ने दी थी । यही तो हम कह रहे हैं । चलो थाने ।
थाने पहुंचे तो वहां डाक्टर झटका और कम्पाउन्डर नैन सुख भी पहुंच गये । अब तक चेला राम की जेब में पड़े अंगूठा नन्द को भी होश आ चुका था ।
जिसे तुम हीरा कह रहे हो वह मैंने एक थैले से निकाला था और वह मेरी कमर से फिसल कर घसीटा राम की जेब में जा पड़ा था ।
पर वह इस डाकू की जेब में से निकला है ।
या फिर कपड़े बदल गये होंगे । जेब बदल गई होगी ।
पर हम पूरे विश्वास के साथ कह सकते है इन्सपैक्टर कि यह घसीटा राम है । हमने प्लास्टिक सर्जरी से इन दोनों की शक्लें एक दूसरे से बदल दी थी ।
अच्छा तो यह चक्कर है ! फिर तो इस अपराध में तुम भी बराबर के हिस्से दार हो। तुम दोनों भी चलो अन्दर ।
प्लास्टिक सर्जरी की डाक्टरी में यह दिन भी देखना पड़ेगा यह पता नहीं था ।
मेरी समझ में अब तक नहीं आ रहा है कि हमसे भूल क्या हुई है ? हम किसको शक्ल कैसी बनाते ?
जैसी अब बनाई है, उससे तो अच्छा था, इस जैसी बना देते !
आगामी अंक में देखिये, मोटू पतलू की एक नई फड़कती हुई कहानी ।

बैंकाक एशियाई खेलों में भारतीय

दौड़ कूद खिलाड़ियों का स्वर्णिम प्रदर्शन

हमारा अनुमान गलत निकला कि भारतीय दल पिछले तेहरान खेलों से घटिया प्रदर्शन करेगा परन्तु दौड़ कूद के ट्रेक खिलाड़ियों ने आशा से भी अधिक बढ़िया प्रदर्शन किया। भारत द्वारा जीते ११ स्वर्ण पदकों में से आठ दौड़कूद खिलाड़ियों ने प्राप्त किये। (यद्यपि भारत कोई पिछला रिकार्ड न तोड़ सका।) धावक हरीचन्द ने ५००० मीटर तथा १०,००० मीटर में दो स्वर्णपदक प्राप्त किये। सुरेश बाबू ने लम्बी कूद का स्वर्णपदक जीता। पिछले एशियाई खेलों में भारत ने कुल चार स्वर्णपदक प्राप्त किये थे। कुल पदक पिछली बार भी २८ मिले इस बार भी, लेकिन स्वर्ण पदकों में बढ़ोतरी बहुत सुखद है। रजत पदक भी भारत को ग्यारह ही मिले। रजत पदकों में ऐंजल मेरी का पेंटाथलोन तथा हॉकी में मिला पदक भी है। आठ स्वर्ण पदकों के अलावा ३ और स्वर्णपदकों में से एक शूटिंग में तथा दो कुश्तियों में प्राप्त हुये। एक मील की रिले दौड़ में भारत जापान से १/१०० सैकिंड मात्र से पिछड़ गया।

भारत के स्वर्ण पदक विजेता

हरिचन्द
५००० मीटर तथा १०००० मीटर
दौड़, दो स्वर्ण पदक



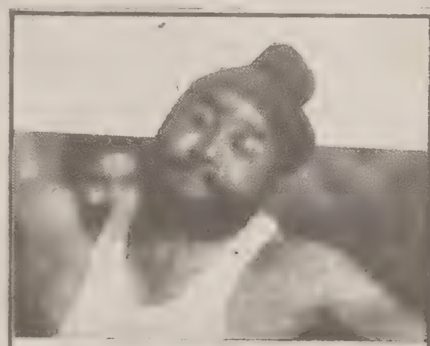
गीता जुत्सी
८०० मीटर दौड़

खेल खेल में

सुरेश बाबू
लम्बी कूद

राजिन्दर सिंह
कुश्ती

करतार सिंह
कुश्ती



बहादुर सिंह
गोला फेंक

रणवीर सिंह
ट्रैप निशाने बाजी

हाकम सिंह
२० किलोमीटर
यात्रा

गणशेखरन
२०० मीटर दौड़

श्रीराम सिंह
८०० मीटर दौड़

इन खेलों में निराशायें भी हाथ लगीं। सबसे निराशा प्रकाश पादुकोने से हुई। एडमंटन के कॉमन वैल्थ खेलों के स्वर्ण पदक विजेता बने तथा बाद में लंदन में उन्होंने विश्व चैम्पियन फ्लेमिंग डैल्फ को हरा कर बहुत आशायें जगायी थीं। परन्तु वे चीनी खिलाड़ी के सामने नहीं टिक सके और प्रारम्भिक दूसरे या तीसरे दौर में ही आऊट हो गये! एक पदक की उनसे बहुत आशा थी। परवीन ने चक्का फेंक में निराश किया। पटियाला ट्रायलों के दौरान जिस दूरी तक उन्होंने चक्का फेंका था उसके नजदीक भी नहीं पहुंच सके। बॉक्सिंग में थापा के साथ बहुत अन्याय हुआ। उन्होंने पाकिस्तानी प्रतिद्वन्द्वी को राऊंड में खूब पीटा परन्तु जब अन्त में रेफ्री ने पाकिस्तानी को विजेता घोषित किया तो सब भौंचक्के रह गये। यहां तक कि खुद पाकिस्तानी अधिकारी भी चकित रह गये। भारतीय अधिकारियों ने तो इसे दिन दहाड़े डाका बताया। विश्व के विभिन्न देशों की स्थिति इस प्रकार रही—

एशियाई खेलों में मैडिलों की तालिका

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
जापान	७०	५९	४९
चीन	५१	५४	४६
दक्षिणी कोरिया	१८	२०	३१
उत्तरी कोरिया	१५	१३	१५
थाइलैण्ड	११	११	१९
भारत	११	११	६
इन्डोनेशिया	८	७	१८
पाकिस्तान	४	४	९
फिलीपिन्स	४	४	६
ईराक	२	४	६
सिंगापुर	२	१	४
मलेशिया	२	१	३
मंगोलिया	१	३	५
लेबनान	१	१	०
सीरिया	१	०	०
बर्मा	०	३	३
होंगकांग	०	२	३
श्रीलंका	०	०	२
कुवैत	०	०	१

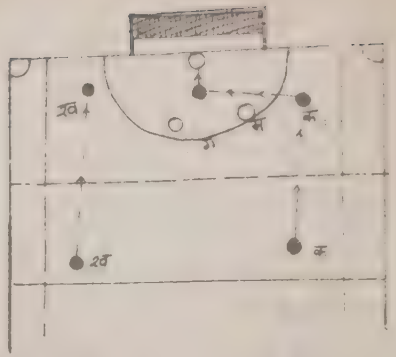
विजय नाशानी—रायपुर (म० प्र०)

प्र० : लेट कट किसे कहते हैं?

उ० : कट करना—बैट को जमीन के समानान्तर लाकर बाल को ऐसे हिट करना कि वह पाइंट और स्लिप के बीच में से होकर जाये कट कहलाता है। लेट कट इसी विधि से जरा देर से खेली हुयी बॉल होती है जिसे स्लिप के बीच से या विकेट कीपर और फर्स्ट स्लिप के बीच से निकाला जाता है।

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

हाकी कैसे खेलें



फ्री-हिट

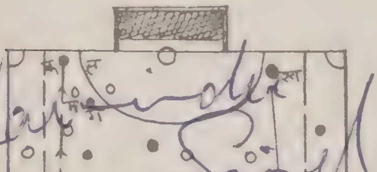
जब किसी खिलाड़ी से खेल में कोई गलती हो जाती है तब अम्पायर विपक्षी को फ्री-हिट लगाने का आदेश देता है। फ्री-हिट कब और कहां से मागनी है, इसका निर्णय भी अम्पायर ही करता है। फ्री-हिट का लाभ विपक्षी खिलाड़ी को तब मिलता है जब—

१. यदि स्टिक फाउल हो जाए यानी गेंद खेलते समय स्टिक कंधे से ऊपर उठ जाये।

२. रांग-साइड या आफ-साइड हो आने पर या हाकी के सपाट हिस्से के पीछे वाले गोल हिस्से से गेंद टकरा जाये।

३. कैरिड हो जाने पर (यानी शरीर के किसी भी अंग से गेंद छू जाने पर)।

फ्री-हिट फुल बैंक पर खेलने वाला खिलाड़ी लगाता है। जब गेंद विपक्षी खिलाड़ी से बचाव पक्ष की गोल लाइन से बाहर चली जाती है तो प्रतिरक्षक टीम को अपने स्ट्राइ-किंग सर्किल के बाहर से फ्री-हिट लगानी होती है। फ्री-हिट को उस तरफ का फुल बैंक ही लगाता है जिस तरह से गेंद मैदान से बाहर गई होती है।



फ्री-हिट लगाना भी एक कला है। यदि फ्री-हिट को ठीक ढंग से लगाया जाय तो वह विपक्षी खिलाड़ियों के नीचे से तेजी से निकल जाती है और उस खिलाड़ी तक पहुंच जाती है जिसको लक्ष्य कर फुल बैंक फ्री-हिट लगाना है। फ्री-हिट में गेंद जमीन से लगती हुई ही जानी चाहिए।

आफ-साइड

जब कोई खिलाड़ी गेंद को विपक्षी गोल की तरफ बढ़ाता हुआ जाता है, उस समय गोल रेखा तथा गेंद के तीन से कम प्रति-रक्षक खिलाड़ी हों और आक्रमण करने वाली टीम का कोई दूसरा खिलाड़ी अपने स्थान से अपने साथी खिलाड़ी से गेंद पाने की आशा में आगे बढ़ जाये तो वह ऑफ-साइड करार दे दिया जाता है।

आफ-साइड खिलाड़ी उसी वक्त दोषी ठहराया जा सकता है जब अम्पायर को यह सन्देह हो जाता है कि वह खिलाड़ी विपक्षी के खेल में बाधा डालना चाहता है या फिर आफ-साइड जगह पर रहकर कुछ अतिरिक्त लाभ उठाना चाहता है। कुछ विशेष परि-स्थितियां, आफ-साइड की स्थिति में भी खिलाड़ी आफ-साइड करार नहीं दिया जा सकता। उदाहरण के लिए चित्र में आक्रम-णकारी 'ख' गेंद को लेकर आगे बढ़ गया है और विपक्षी गोल क्षेत्र के बाहर तक पहुंच गया है। उधर दूसरी तरफ उसी का साथी खिलाड़ी 'क' भी आगे बढ़कर सभी रक्षकों को पीछे छोड़ता हुआ गोल क्षेत्र के बाहर तक पहुंच गया है लेकिन खिलाड़ी 'ख' गेंद 'क' को न देकर एक अन्य अपने उस सह-योगी खिलाड़ी '[illegible]' को गेंद पास कर देता है जो 'डी' के पास तक पहुंच गया है। इस प्रकार की स्थिति में इन तीनों में से कोई भी खिलाड़ी आफ-साइड करार नहीं किया जा सकता।

इसी प्रकार एक अन्य विशेष परिस्थिति में खिलाड़ी को आफ-साइड करार नहीं दिया जा सकता। चित्र में खिलाड़ी 'ख' विपक्षी गोल क्षेत्र के नजदीक पहुंच गया है लेकिन दूसरी ओर से जब उसका सहयोगी खिलाड़ी गोल क्षेत्र के नजदीक पहुंचकर उसे पास देता है और यदि पास दी हुई गेंद को विपक्ष का गोल रक्षक आगे बढ़कर रोक लेता है और हिट कर देता है तो ऐसी परि-स्थिति में खिलाड़ी 'ख' आफ साइड होने से बच जाता है।

पुश इन

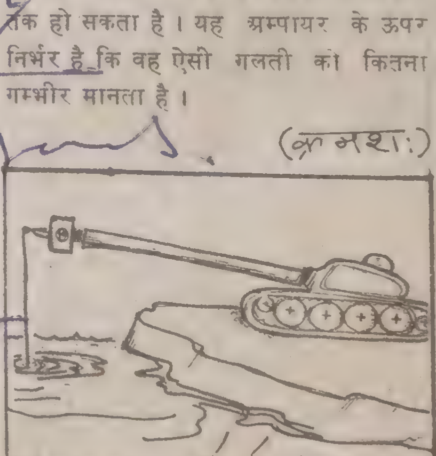
यदि गेंद पूरी तरह किसी खिलाड़ी के पक्ष-रेखा के पार चली जाये तो रेखा के जिस स्थान से गेंद बाहर जाती है, गेंद को उसी स्थान पर रखकर पुश-इन द्वारा खेल फिर से शुरू किया जाता है। पुश-इन में गेंद जमीन से लुढ़कती हुई जानी चाहिए। पुश-इन के समय किसी भी टीम का कोई खिलाड़ी गेंद से पांच गज की दूरी पर खड़ा रह सकता है।

गलत पुश-इन लेने पर विपक्षी टीम को दंडस्वरूप पुनः पुश-इन दिया जाता है यानी पुश-इन लेने पर यदि गलती हो जाय तो दोबारा दंड देने के रूप में पुनः पुश-इन स्ट्रोक ही दिया जाता है, फुल हिट नहीं।

हुक

यदि कोई खिलाड़ी गेंद लेकर आगे बढ़ रहा हो और विपक्ष का खिलाड़ी आकर उस खिलाड़ी की स्टिक में अपनी स्टिक फंसा कर बाधा उत्पन्न करता है तो गलती को 'हुक' कहा जाता है। इस समय खिलाड़ी की टीम को कोई भी दंड दिया जा सकता है। दंड पेनल्टी कार्नर या इससे भी गंभीर तक हो सकता है। यह अम्पायर के ऊपर निर्भर है कि वह ऐसी गलती को कितना गम्भीर मानता है।

(क्रमशः)

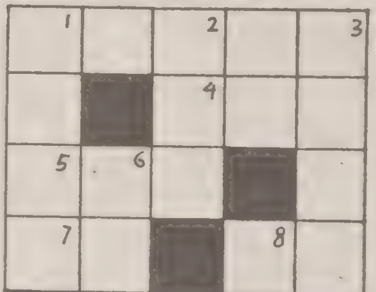



फैण्टम
और
तीन हत्यारे
एक तो पकड़ लिया है बाकी दो भाग निकले. धन्यवाद, ग्रोवर···
मैंने ग्रोसेवान मे पता लगाया है,तीनों ने बन्दूक के लिए गार्ड को मारा था··
और बन्दूकें छीन लो।
बन्दूक छीन लो
ठांय
ठांय
तुमने और तुम्हारे साथियों ने ग्रोसेवान के तीन गार्डों की जान ली···अब जल्दी से यह बताओ कि तुम लोग किसके इशारे पर काम कर रहे हो ?
तुम अपने आपको बहुत चालाक बनते हो।
मुझे सीधा साधा जवाब चाहिए !
टक्कर
ओह. हम तीनों किसी बड़े शहर को लूटना चाहते थे···
श्रीमान यह हत्यारा है और पुलिस इस पर ज्यादती करना नियम के विरुद्ध समझती है।
पुलिस वालों के लिए यह नियम अच्छा है, मगर मैं पुलिस वाला नहीं हूं।
जंगल की पुरानी कहावत है कि फेंटम ईंट का जवाब पत्थर से देता है।
तुम्हारी आवाज काफी जानी पहचानी लगती है, हम पहले भी मिल चुके लगते हैं ?
मिलने की बात कहते हो ? जंगल पैट्रोल के हैड क्वार्टर के बाहर हर रोज तो मैं तुम्हें सचेत किया करता था।
कर्नल वीकस ?
ओह··· यस ?
···तभी टेलीफोन भी···
कर्नल आपके लिए फौन X-बैण्ड पर !
हमारा···अज्ञात कमाण्डर !
हम जरूर पहले कहीं मिल चुके हैं···
अगर तुम्हें याद आ जाये तो मुझे बता देना···
जो भी हो···तुमने हमारी जान बचाई है।
वो तो मेरी कोशिश थी कर्नल वीकस···नहीं तो वे लुटेरे यहां कुछ भी न छोड़ते।
कभी हमारे यहां भी आना, अपनी खूबसूरत दुल्हन को साथ लाना न भूलना।
निमन्त्रण के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद राजकुमार तीराना।
ड्यूड इस घोड़ी को यहाँ से भगा ले चलते हैं।
अच्छा आइडिया है··· वो नकाबपोश हम तक पहुंच भी नहीं पायेगा···



दीवाना वर्ग पहेली 10 रु० इनाम जीतिये

अन्तिम तिथि: ३ फरवरी १९७९



संकेत

बायें से दायें

१. पूरा जुल्म ढाने में थोड़ी सी कसर भर रह गयी बस इस महीने। (५)

४. अर्जी।

५. हवा जो बाद में एक नम्बर की चलती है। (३)

७. गफलत की आदत। (२)

८. पति जो कुछ-कुछ भीगी बिल्ली सा बोलता है ? (२)

९. नयी दुल्हन के बीच में क्या छूट गया जिससे पूरा मजा नहीं आया सुनने में ? (३)

ऊपर से नीचे

१. एक क्षण की सादी अभिनेत्री ? (४)

२. बिल्ली की आवाज शुरू ही हुई थी कि जहाज आ गया अब तो तलवार रख दो। (३)

३. इनमें खाने को मिलता है। (४)

६. और सशरीर जन्म भूमि ! (३)

८. एक क्रिश्चियन लड़की जिससे भेंट हुई ? (२)

जोड़ो पहेलियाँ

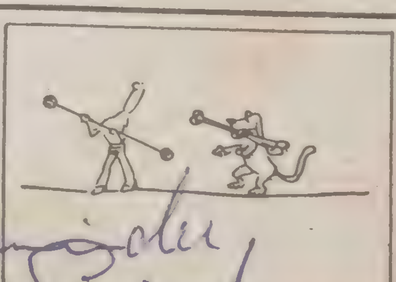
१. पास बुलाने में माला जोड़ो और खाओ।

२. छोटे में गाड़ी जोड़िये और भला कीजिये।

३. सूरज में आघात जोड़िये और छुट्टी कीजिये।

४. उम्मीद में नजदीक जोड़िये और एक दूसरे के निकट होइये।

५. बरसात में इज्जत जोड़िये और सत्कार कीजिए।



क्यों और कैसे

प्र० : क्या वायु में वजन होता है ?

महेश कुमार शर्मा—डिबरुगढ़

उ० : हम सब अधिकतर वायु को 'कुछ नहीं' ही समझते हैं परन्तु वायु वास्तव में 'कुछ है'। क्योंकि वायु गैसों से बना तत्व है। गैस का कोई आकार या नाप नहीं होता परन्तु ये स्थान घेरती हैं।

वायु का महान् सागर पृथ्वी के चारों ओर तथा कई मील ऊपर तक फैला हुआ है। तथा ये वायु मण्डल अपने स्थान पर पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण ठहरा हुआ है। वायु में वजन है' के लिए हम कह सकते हैं कि वायु जिस वस्तु में भरी होती है उसका वजन बढ़ाती है। उदाहरण के लिए फुटबाल ले लीजिये, हवा भरी फुटबाल का वजन तोलने पर बिना हवा भरी फुटबाल से अधिक होता है इससे साफ जाहिर होता है कि हवा में वजन है।

हवा का वजन दबाव भी डालता है। वायु हमारे शरीर पर चारों ओर से ठीक उसी प्रकार दबाव डालती है जैसे समुद्र के नीचे पहुँचने पर पानी डालता है ये दबाव एक वर्ग इंच पर लगभग १५ पौंड होता है। १५ पौंड का दबाव एक वर्ग इंच स्थान पर होता है तथा ये दबाव उतनी ही मील की ऊंचाई तक जाता है जितनी ऊंचाई तक हवा फैली है। अनुमान लगाइये हमारी हथेली में लगभग १२ वर्ग इंच होते हैं इसका अर्थ हुआ १५×१२ या १८० पौंड का दबाव केवल एक हाथ की हथेली पर पड़ रहा है परन्तु फिर भी हमें ये बिल्कुल महसूस नहीं होता। इसका कारण है कि हथेली के नीचे से भी वायु उतना ही दबाव डालती है जितना ऊपर से वायु नीचे डालती है। हमारे सिर पर लगभग ६०० पौंड का दबाव हर समय पड़ता है परन्तु फिर भी न पिचकने का कारण भी हमारे शरीर के अन्दर की वायु है, जो कि बाहर वाली वायु के समान ही अन्दर से बाहर का दबाव डालती है।

ऊँचाई पर जाने से वायु का दबाव कम हो जाता है अर्थात यदि हम किसी २०,००० फुट ऊँचे पहाड़ पर पहुँच जायें तो वायु का दबाव वहाँ केवल ६.४ पौंड एक वर्ग इंच हो जाता है। इसी प्रकार पृथ्वी से ६२ मील की ऊंचाई पर पहुँच कर वायु का दबाव पूर्णतया समाप्त हो जाता है, तथा मनुष्य का वजन भी कम हो जाता है इसलिए ये निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि वायु में भार है।

प्र० : वायुयान कितने प्रकार के होते हैं तथा ये कैसे उड़ते हैं ?

मुजम्मिल हुसैन—मुरादाबाद

उ० : सदा ही मानव पक्षियों को हवा में उड़ता देख ईर्षा से भर गया है तथा इसी कारण सदा से ही इस प्रयास में संलग्न है कि हवा में पक्षी की ही भांति स्वछन्द उड़ सके। लगातार लम्बे समय तक भांति-भांति के प्रयोग करने के बाद ही मनुष्य अपने लिये एक ऐसा वाहन बनाने में सफल हो सका है जिसमें बैठ कर वो भी पक्षियों की भांति हवा में विचरण कर सकता है। इसे मनुष्य ने वायुयान का नाम दिया है।

इस कार्य के लिये बनाये जाने वाले आरम्भिक वायुयान बहुत कम गति से उड़ने वाले अत्यन्त साधारण यान थे। परन्तु वर्षों तक लगातार प्रयास करके मनुष्य तरह-तरह के वायुयान बनाने में सफल हो गया है।

वायुयान कई प्रकार के होते हैं, सबसे पहले धातु से बने वायुयान 'डकोटा' थे। इसके बाद फ्लाइंग फोररैटस तथा स्पिट-फायर जैसे विमान युद्ध में प्रयुक्त हुए। फिर 'जैट' विमानों का निर्माण हुआ। जैट विमान राकेट से उर्जा प्राप्त कर ध्वनि की गति से भी तेज उड़ने लगे। तथा कौमट नामक ब्रिटिश जैट विमान आम यात्रा के लिए भी प्रयोग में लाया गया। आधुनिकतम विमान सुपरसैनिक विमान हैं इनकी गति ध्वनि की गति से भी दुगुनी होती है।

वायुयान को उड़ाने के लिये विमान में धरती के आकर्षण से ऊपर उठने की क्षमता पैदा करना है। ये क्षमता वायुयान के परों के ऊपर वायु की गति को निधारित करके उत्पन्न की जाती है। वायुयान के परों के ऊपर विशेष क्रस सैक्शनल आकार होता है। इसे ऐरोफोयल कहते हैं। ये ऐरोफोयल ही विमान में ऊपर उठने की क्षमता पैदा करते हैं। इन ऐरोफोयल का आकार ऊपर से मुड़ा हुआ तथा नीचे से सपाट होता है। परों के ऊपर वाली हवा परों के नीचे की हवा से अधिक गति से चलती है क्योंकि उसे अधिक दूर चलना होता है तथा इसके फलस्वरूप पर के ऊपर का दबाव नीचे के दबाव से कम हो जाता है तथा एक प्रकार का खिंचाव या स्कशन परों को ऊपर उठाती है, ये खिंचाव परों को ऊपर की ओर मोड़कर बढ़ाया जाता है और इस प्रकार वायुयान ऊपर उठता है। वायुयान को आगे बढ़ने की शक्ति उसके पंखे या जैट इंजन द्वारा प्रदान की जाती है। वायुयान को हल्का बनाये रखने के लिये इसके बनाने में अधिकतर एलुमिनियम मिश्रण धातु का ही प्रयोग किया जाता है।

प्र० : काले तथा सफेद जादू से क्या तात्पर्य है ? तथा इनमें क्या अन्तर है ?

मनोज कुमार—हाथरस

उ० : जादू एक ऐसी कला समझी जाती है जिसके द्वारा भेद भरे रहस्यमय तथा अवैज्ञानिक तरीके से घटनाओं को बदलने का प्रयास किया जाता है। आधुनिक युग में जादू को झूठा तथा असम्भव समझा जाता है। परन्तु प्राचीनकाल में जादू पर विश्वास किया जाता था तथा समझा जाता था कि जादू की सहायता से कुछ घटनाओं को इच्छानुसार बदला जा सकता है।

बंगाल का काला जादू भारत में बहुत प्रसिद्ध है परन्तु काला जादू है क्या ? किसी भी बुरी इच्छा की पूर्ति या किसी को हानि पहुंचाने के भाव से किया जादू काला जादू कहलाता है इसके विपरीत सफेद जादू काले जादू पर काबू पाने के लिए किया जाता है या यूं कहिये काले जादू द्वारा की गई बुराई से छुटकारा पाने के लिए किया जाता है। इसके साथ-साथ ये भी विश्वास किया जाता है कि सफेद जादू की सहायता से किसी का उपकार भी हो सकता है।

काले जादू को करने वाले जादूगर भूत प्रेतों को अपने वश में कर उन्हें अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने पर बाध्य करते हैं।

भारत में भी इस प्रकार के जादूगरों के जादू का बहुत चलन था। अन्धविश्वासों के कारण लोग बिना तर्क इन पर विश्वास कर हर प्रकार के कार्य करने में जादूगरों की सहायता लेते थे। यहाँ तक कि बहुत-सी बीमारियों के उपचार के लिए भी लोग इनका ही सहारा ले लेते थे।

इन्हें भी आजमाइये

आपने विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में इस शीर्षक से कुछ टोटके छपे देखे होंगे जिनमें बताया जाता है कि कपडों से स्याही के दाग छुड़ाने के लिये क्या करना चाहिये अथवा रात के बचे चावल का उपयोग कैसे करें या हरी सब्जी को देर तक हरी रखने के लिए क्या करें आदि-आदि । अब इस फीचर में हम आपको दीवाना के 'इन्हें आजमाइये' टोटके-फार्मूले बताते हैं । कमर कस लीजिये कि इनमें से एक जरूर आज़माना है !

टैस्ट क्रिकेट केक



जिन दिनों टैस्ट मैच होते रहते हैं और टी. वी. पर टेलेकास्टिंग होती है तो टी. वी. दिन भर चलता है । फलस्वरूप वहुत गर्म हो जाता है । इसका गृहणी फायदा उठा सकती हैं। सर्दियों में ठंड के कारण दही जल्दी नहीं जमती । आप कटोरे में दूध डाल जामन मिला कर टी. वी. पर रखें जल्दी जम जायेगा । सबसे बढ़िया बात तो तव वनेगी जब आपको केक बनाना आता हो । केक का मसाला तैयार कर डब्बे में भर टी. वी. पर रखें. टैस्ट मैच का खेल खत्म होते-होते तक धीमी गर्मी में पकी बहुत उम्दा केक तैयार मिलेगी ।

देश सेवा का टोटका



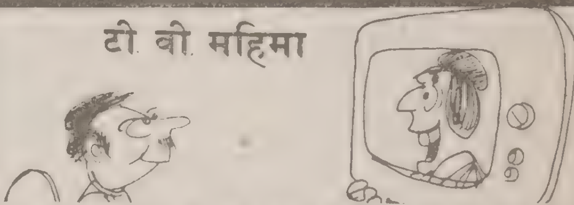
आप अपने लड़के का नाम देशराम या देशमल या देश प्रसाद या देश कुमार रखें। भाग्यवश आप मंत्री बने तो अपने वेटे से फेक्ट्रियां तो खुलवायेंगे ही । पूछे जाने पर आप छाती ठोक कर कह सकते हैं आपने सब कुछ देश के लिये किया है सच भी है देश आपका ही लड़का तो है।

बचे खाने का उपयोग



आपने मैगजीनों में बचे खाने के उपयोग पढ़े हैं । लेकिन हम जो तरीका बताने जा रहे हैं वह करोड़ों में एक है । पन्द्रह दिन के बचे खाने से पांच साल के लिये रोटी पैदा कर सकती हैं आप । बचे चावल व रोटियां एक ड्रम में डालती जायें। पन्द्रह दिन बाद ड्रम में पांच लीटर खौलता पानी ड़ालें। पन्द्रह दिन पड़ा रहने दीजिए । सोलहवें दिन ड्रम को चूल्हे पर रख उबालना शुरू करें । बाकी काम अपने आप हो जायेगा । पुलिस पकड़ कर ले जायेगी और कम से कम पांच साल जेल की मुफ्त की रोटियां तोड़ने का जोग बन जायेगा । क्योंकि हमने जो तरीका आपको बताया वह शराब बनाने का है। जब ड्रम उबलने लगेगा तो शराब की महक थाने तक भी चली जायेगी।

टी. वी. महिमा



यदि आपके पति आपकी बात नहीं सुनते तो आप गत्ते का टी. वी. साइज का टुकड़ा लें, बीच में स्क्रीन के बराबर टुकड़ा काट दीजिए। जब पति से बात करनी हो तो चित्र में दिखाई विधि से गत्ता रख बातें करें। पति घंटों आपकी बात सुनते रहेंगे चुपचाप। उन्हें टी. वी. के सामने चुपचाप बैठे देखते सुनते रहने की आदत जो पड़ गयी है।

झाड़ भई झाड़



आपको घर में कार्पेट या दरी पीटने, झाड़ने का काम सौंपा जाता है ? तो आप दरी या कार्पेट का नाम पड़ोसी के नाम से रखें। फिर देखिये उन्हें डंडे मारने में क्या मजा आता है ?

ऊल जलूल



आप एक उल्लू पालिये और उसका नाम श्रीमान जी रखिये। इसके बाद जब भी आप किसी व्यक्ति को श्रीमान जी कह कर पुकारेंगे तो दिल में यह खुशी होगी कि अप्रत्यक्ष रूप से आप उसे उल्लू कह रहे हैं। दिल में गुदगुदी होगी। आपने सच्ची बात भी कह दी और कड़वाहट भी पैदा नहीं हुयी।

पढ़ाई में दिल नही लगता



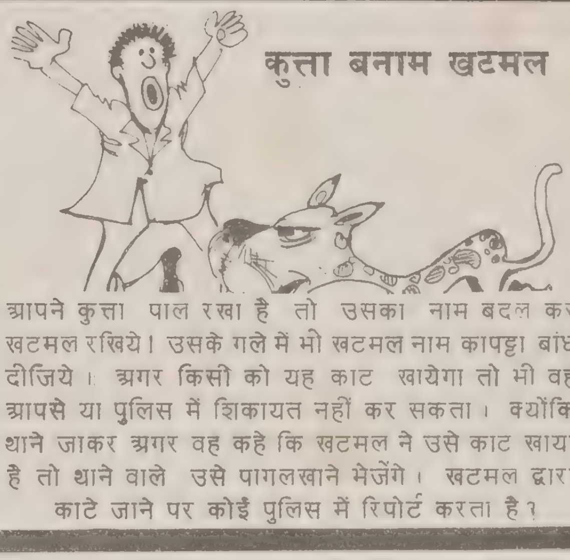
आपका दिल पढ़ाई में नहीं लगता? तो आप एक काम करें। अपनी पाठ्य पुस्तकों को क्रिकेट बेट कह कर पुकारना शुरू करें। परीक्षकों और शिक्षा मंत्रालय को फॉस्ट बालर कहें। प्रश्न पत्र को बम्पर, इनस्विंगर और आऊट स्विंगरों का ताना-बाना मान लें। माता-पिता को विकेट कीपर कह कर पुकारें। अब यह सब आपकी विकेट झाड़ने के चक्कर में हैं, आपको विकेट बचानी है, सेंचुरी बनानी है। कोर्स की किताबें पढ़िये यही आपकी बेटिंग होगी। अब जब आप पुस्तकें पढ़ेंगे तो ऐसा लगेगा जैसे बैटिंग कर रहे हैं, आप खेल रहे हैं पर असल में पढ़ रहे हैं! कैसी रही?

रामनाम का चमत्कार



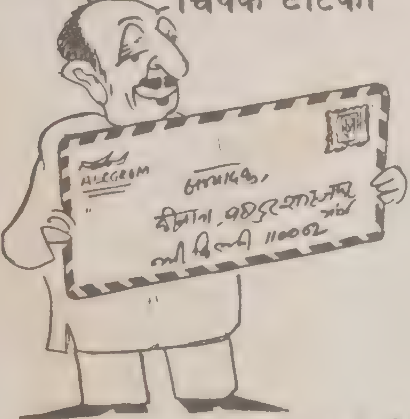
हाल में ही आपने पढ़ा होगा कि अंडे को शाकाहारी भोजन साबित करने के लिये पोल्ट्री उद्योग वाले अंडे को राम लड्डू के नाम से मशहूर करने लगे हैं। आप मुर्गे को राम पकोड़ा और व्हिस्की को राम लस्सी कहना शुरू करें और घर में ही बीबी के सामने ही रामपकोड़े और रामलस्सी का सेवन कर सकते हैं। पकोड़ों और लस्सी सेवन में तो कोई बुराई नहीं है।

कुत्ता बनाम खटमल



आपने कुत्ता पाल रखा है तो उसका नाम बदल कर खटमल रखिये। उसके गले में भी खटमल नाम कापट्टा बांध दीजिये। अगर किसी को यह काट खायेगा तो भी वह आपसे या पुलिस में शिकायत नहीं कर सकता। क्योंकि थाने जाकर अगर वह कहे कि खटमल ने उसे काट खाया है तो थाने वाले उसे पागलखाने भेजेंगे। खटमल द्वारा काटे जाने पर कोई पुलिस में रिपोर्ट करता है?

चिपक टोटका



आजकल प्रायः ऐसी टिकटें आती हैं जिनके पीछे घटिया गोंद लगा होता है। टिकट लिफाफे पर ठीक से चिपकता ही नहीं। इसके लिये आप लिफाफे को कुर्सी और टिकट को नेता कहने का अभ्यास करें। नेता कुर्सी से पचास हार्स पावर की चिपक शक्ति से चिपका रहता है। शायद यही चिपक शक्ति का असर टिकट और लिफाफे में भी आ जाये।

चलाओ दिमाग



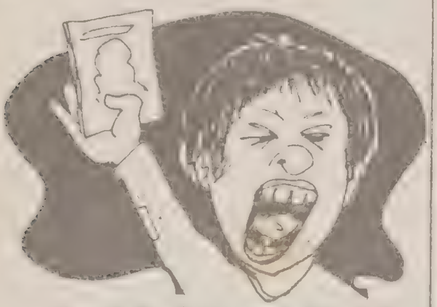
अगर आप फिल्म प्रोड्यूसर हैं। आपकी आज तक बनाई कोई फिल्म नहीं चली है तो अपनी अगली फिल्म का नाम 'चल गई' रखिये। अगर हॉल पर न भी चले तो फिल्म 'चल गई' है!

'दस पैसे में आ गले लग जा'

—मोहन प्रकाश अग्रवाल

इतवार का दिन था, बाजार में और दिनों की अपेक्षा आज भीड़ जरा अधिक थी।

मैं भी सोचकर जरा घूमने निकल आया था तभी मैंने देखा कि हमारे पड़ौसी मि० आलू बुखारे एवं उनकी धर्म-पत्नी मिसेज गोल गप्पा सामने से फुटबाल की तरह लुढ़कते चले आ रहे हैं। तभी एक लड़का हाथ में कुछ लिए उनकी धर्म-पत्नी मिसेज गोल गप्पा के पास जाकर कुछ बोला जिसे सुनकर मि० आलू बुखारा की त्योरियाँ चढ़ गईं और वह अन्धाधुन्ध उस लड़के की धुनाई करने में लग गये। अब तो हम भी उनके पास जाकर खड़े हो गये और स्थिति का मुआयना करने लगे कि तभी पुलिस आ गई और लड़के एवं आलू बुखारे को उनकी धर्म-पत्नी के साथ-साथ मुझको भी गवाह बनाकर ले गई!



पूछताछ के दौरान जब मि० आलू-बुखारे से पूछा गया तो वह बोले साहब यह बदतमीज लड़का मेरे ही सामने मेरी धर्म-पत्नी से बदतमीजी कर रहा था। थानेदार ने जब उनकी धर्म पत्नी की तरफ देखा तो वह पसीना पोंछती हुई बोली, 'हाँ थानेदार साहब, यह लड़का मुझ से कह रहा था 'दस पैसे में आ गले लग जा...'

अब तो थानेदार को भी बड़ा गुस्सा आया कि यह छोटा-सा छोकरा राह चलती औरतों को छेड़ता है। उन्होंने दहाड़कर जब पास खड़े हुए लड़के से पूछा तो वह लड़का रोता हुआ बोला, 'साहब मेरी इसमें कोई गलती नहीं है। मैं तो फिल्म 'आ गले लग जा' के गाने की किताबें १०-१० पैसे में बेच रहा था कि इन साहब ने मुझे पीटना शुरू कर दिया।'

हाथ और पांव

अखिलेश्वर

युवती के पिता से
युवक ने कहा,
'आपकी लड़की का पांव मांगने आया हूं,'
पिता के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा।
बोले, 'हाथ क्यों नहीं, बरखुरदार?'
युवक बोला, 'हुजूर!'
हाथ की जरूरतें बहुत बड़ी हैं,
हाथ को सोने की चूड़ियां चाहिएं,
हाथ की शोभा
सोने की अंगूठी है,
हाथ की सबसे बड़ी जरूरत
इंपोर्टिड घड़ी है।
जबकि पांव केवल चप्पल मांगते हैं
जो मेरी चांद पर
सैंकड़ों पड़ी हैं।'

सफलता

सूरजभान, जिस दिन से
पहलवानी छोड़ कर
वैदिक के धंधे में आया है।
सचमुच 'बड़ा' नाम कमाया है।
विरोधियों से बदला लिया है,
अच्छे-अच्छों को
एक ही खूराक में सीधा किया है।
अखाड़े में जिनकी लंगड़ी खाकर
सूरज भान लद्द-लद्द गिरता था
वही नीम मार खां
आज सूरज भान की दी हुई
दो पुड़ियां खाते हैं
और बच्चा-बच्चा जानता है
कि चारों खाने चित्त आते हैं

गिरता स्टार

—आजाद रामपुरी

'चौराहे पर,
रात्रि के दो-दो बजे तक,
एक-एक के क्रम से,
ये,
कौन रो रहे हैं?'
पूछा नेता ने,
अपने जी हुजूरिये चमचा से,
तो वह बोला—
'हुजूर,
ये तो,
आपके द्वारा उद्घाटित हिन्दी दिवस पर
आयोजित कवि.सम्मेलन में,
कविता-पाठ हो रहे हैं॥'

समता

वे, हर चुनाव में,
विजय रूपी,
जनक दुलारी सीता का—
वरण करने में,
कहां डर रहे हैं,
रहा प्रश्न,
धनुष-भंग का,
सो उसके स्थान पर,
वे शाही बंगलों में बैठ,
वचन भंग कर रहे हैं॥

दक्षता

वे,
सत्य का लबादा,
ओढ़ने में,
इतने अनूठे हैं
कि अपने,
हर झूठे कृत्य को,
सत्य के आवरण से
ढंकने के लिये,
पोर-पोर टूटे हैं॥

बन्द करो बकवास


माना जनाब ने पुकारा नहीं
बन्द करो बकवास. आज कुछ भी कर लो मैं खाना खिलवाने वाला नहीं।
CANTEEN
आपने याद दिलाया तो हमें याद आया
बन्द करो बकवास. मैंने सॉस की बोतल लाने को कहा है तुम्हारी मां को नहीं।
मेरे सजना जी उतरेंगे पार हो नदिया धीरे बहो।
बन्द करो बकवास. और जल्दी से किसी को बुलाओ।

बलिदान किसका

—रामकिशोर शर्मा



प्राचीन समय की बात है जब अयोध्या में राजा मानधाता राज्य किया करते थे। मानधाता के शासन में सभी सुखी थे। वीर होने के कारण उनका गुणगान दूर-दूर तक था। इसके साथ ही वे कुछ दुष्ट प्रवृति के भी थे।

एक बार की बात है कि राजा ने रात को सोते समय सपने में अपने पास काली मां को खड़े देखा, जो राजा को सम्बोधित करते हुए कह रही थी—'बलिदान' दें।

सुबह राजा की नींद खुली तो वे कुछ चिन्तित थे। राजा ने अपने मन्त्री तथा दरबारियों से पूछा—मेरे इस सपने का क्या अर्थ है? सभी ने राजा को चिन्तित देखा तो कहा कि 'काली ने बलिदान मांगा है।' दूसरे दिन भी राजा ने वही सपना देखा। राजा ने सुबह ही ज्योतिषियों को बुलाकर सपने की बात कही। ज्योतिषियों ने विचार करने के उपरान्त कहा, 'राजन् यहाँ से २० मील दूर जो काली मां का एक मन्दिर है, जिसमें एक विशाल मूर्ती रखी हुई है। वह नर बली चाहती है।' तीसरे दिन राजा को नींद नहीं आ रही थी। जैसे-तैसे राजा को नींद आई भी तो फिर वही सपना देखा जिसमें काली मां गुस्से से क्रुद्ध स्वर में कह रही थी।—'बलिदान नहीं तो तेरा राज्य नाश हो जायेगा!'

राजा ने और राय लेना उचित नहीं समझा। इसीलिए उन्होंने घोषणा कर दी जिसमें यह कहा गया—जो व्यक्ति बलि के लिए तैयार होगा। उसके परिवार वालों को एक लाख स्वर्ण मुद्रायें दी जायेंगी।

घोषणा हुए बहुत दिन बीत गये। पर कोई भी नहीं आया। भला मरना कौन चाहेगा। इस बीच राजा को लगातार सपना आता रहा जिसमें काली मां कहती—जल्द बलिदान वरना राज्य का नाश। राजा बहुत घबरा गया। वह स्वयं नर बलि के लिए व्यक्ति की खोज में चल दिया। सुबह से शाम होने को हुई, पर कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला। जो बलि के लिए तैयार हो। अतः हताश होकर वह एक वृक्ष के नीचे बैठ गया और अपने इधर-उधर दृष्टि घुमा कर देखने लगा। तभी राजा ने एक पेड़ के नीचे १२ वर्षीय सुन्दर बालक को बैठा देखा। राजा बालक के पास जाकर बैठ गया। राजा ने बालक से पूछा—तुम्हारे पिता का नाम क्या है?

बालक—शिव।

राजा—तुम कहां रहते हो।

बालक—शिव में।

राजा—तुम्हारी जाति।

बालक—शिव।

राजा—तुम्हारा नाम।

बालक—शिव।

राजा को अपने बहुत से प्रश्नों का एक ही उत्तर पाते हुए कुछ गुस्सा आया। राजा ने बालक से फिर पूछा—तुम क्या खाते हो?

बालक—शिव।

राजा ने सोचा लड़का पागल है तभी तो इस वीरान वन में अकेला बैठा है। राजा ने विचार किया कि यही बालक बलि के लिए ठीक रहेगा।

राजा उसे अपने साथ महल में लाया। रानी ने बालक को देखा फिर राजा से कहा—मैं पुत्र हीन हूं। मै इसे अपना बेटा बनाऊंगी।

राजा ने कहा—रानी यह तो पागल है। मैं इसे बलि के लिए लाया हूं।

रानी—पागल! पर आपने कैसे जाना।

राजा—इससे कुछ भी पूछो एक ही उत्तर देता है, 'शिव'। रानी ने भी बालक से अनेक प्रकार के प्रश्न पूछे। बालक ने वही एक उत्तर दिया। अन्त में रानी ने हार कर राजा से कहा—सचमुच पागल है। पर इसकी बलि नहीं हो सकती, क्योंकि पागल का बलिदान शास्त्र विरोधी है। (अन्धे, काने, गूंगे, लंगड़े, रोगी आदि की बलि नहीं दी जाती)।

राजा ने रानी की बात सुनी तो चिन्ता में डूब गये। अन्त में राजा को कुछ नहीं सूझा तो सभा बैठाई। सभा में रानी सहित अन्य पन्डित, ज्योतिषी तथा अन्य लोग थे। राजा ने खड़े होकर कहा—'आप सब को यहां पर इसलिए बुलाया गया है क्योंकि आज मैं एक बालक लाया हूं। उसकी बलि उचित है या नहीं। बालक वह बैठा है, राजा ने उंगली से एक कौने की ओर इशारा कर दिया। सभी ने देखा, बालक एक चौकी पर बैठा मुस्करा रहा था सभी बालक को देखकर मोहित हो गये। और आपस में उसकी प्रशंसा करने लगे। राजा यह देख गुस्से में आ गये और कहा—'मूर्खो यह पागल है और इसे जो भी देखता है तो वह भी पागल हो उठता है। जैसे तुम सब और रानी जी। सभी के मुख से एक साथ निकला—पागल! क्या यह पागल है? सभी के मुख आश्चर्य से खुले रह गये। मन्त्री ने राजा से कहा—हे राजन यदि आज्ञा है तो मैं इसका पागल-पन दूर कर दूं। राजा के मुख पर प्रसन्नता छा गई और कहा—तुम जो भी कर सकते करो। यह मेरी आज्ञा है। मन्त्री ने बालक से अनेक प्रश्न पूछे, पर उसका एक ही उत्तर पाकर मन्त्री का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया और बालक के बाल पकड़ कर ऊपर उठा कर फिर प्रश्न किया पर वही उत्तर। बालक के गाल पर एक जोरदार तमाचा जमा कर एक कोने की ओर उछाल दिया। बालक फर्श पर आकर गिरा और उसकी आंख में आंसू छल-छला आये। रानी से यह सब नहा देखा गया। रानी ने रोते हुए कहा—मेरे सामने यह सब

मदहोश



नहीं होगा। बाहर ले जाओ।

बालक सहित सभी बाहर आ गये। राजा की चिन्ता और बढ़ने लगी। उन्होंने पण्डित से कहा—'मान लो यह लड़का पागल ही हो तो क्या इसका बलिदान नहीं हो सकता।' पण्डित ने कहा—'यह सम्भव नहीं राजन्। राजा ने बात बनाने के लिए कहा—'परन्तु पण्डित जी यह तो ज्ञान में पागल हुआ है, तभी तो हर प्रश्न के जवाब में शिव कहता है।' पण्डित ने राजा की बात सुन कर कहा—हे राजन् ! यदि ऐसी बात है तो हवन के फलस्वरूप बलिदान हो सकता है।

राजा यह सुन प्रसन्न हुए। और अपने सबसे विश्वास पात्र मन्त्री को आज्ञा दी—'सारी हवन सामग्री लाई जाये। शहर में घोषणा करा दो कि कल सोमवार है, कल काली के मन्दिर में बलिदान होगा।'

रात को राजा प्रसन्न चित्त हो कर सो रहे। फिर वही सपना देखा। जिसमें काली का चेहरा बहुत ही भयानक लग रहा था। वह कह रही थीं—'बलिदान जिसमें राजा ने कहा—हे माता कल बलिदान दे दूगा। इतना राजा ने कहा ही था कि काली ने अपनी तलवार से राजा का सर काट दिया। राजा घबराकर उठ बैठे। अपने चारों ओर देखने लगे। पर वहां कुछ नहीं था। राजा ने यह सोच अपने मन को तसल्ली दी की बलिदान में देर होने के कारण मां क्रुद्ध है। पर वे सारी रात सो नहीं सकें।

सुबह काली के मन्दिर में अपार भीड़ थी। हवन की क्रिया समाप्त हुई, तब राज पुरोहित ने शंख फूका, राजा ने म्यान से तलवार निकाली। पुरोहित ने बालक के माथे पर चन्दन लगाया और गले में फूलों का हार पहनाया गया।

राजा ने बालक से पूछा—किसी से मिलना है। बालक—शिव से। राजा—तुम्हारी बलि होगी। बालक-शिव पर।

राजा ने ज्यों ही तलवार चलाई। हाथ को पकड़ते हुए काली मां साक्षात प्रकट हुई। राजा के हाथ से डर के मारे तलवार छूट गयी।

काली मां ने कहा—'मूर्ख राजा तू धन और यश में इतना डूब गया कि तुझे इतना भी ध्यान नहीं रहा कि तलवार शिव है। मारने वाला ही शिव है तब शिव का भक्त भी शिव ही हुआ। और शिव मर नहीं सकते, वह तो अमर हैं।'

राजा बहुत डरे हुए थे। उन्होंने कहा—भूल हो गई माता। मुझे क्षमा कर दो।

काली मां ने कहा—'क्षमा मुझसे नहीं, इस बालक से मांग। मन्त्री ने यह देखा, सुना तो दौड़ा-दौड़ा आया और बालक के चरणों पर सिर रख कर क्षमा मांगने लगा। बालक मुस्करा रहा था।

काली ने मुस्कराते हुए कहा—'हे राजन, मैंने जो बलिदान मांगा था। उसका मतलब यह तो नहीं कि किसी निर्दोष जीव को मार डालो। सभी मेरे पुत्र हैं। क्या मैं माता होकर भी अपने पुत्रों की बलि लूंगी ? बलिदान शब्द का अर्थ तूने गलत लिया। बलिदान शब्द का तात्पर्य है कि यदि तू अपने अहंकार का बलिदान कर सकेगा तो तुझे मेरे दर्शन अपने में ही हुआ करेंगे। यह कह काली मां अदृश्य हो गई। राजा ने बालक को सीने से लगा लिया। राजा की आंखों में आंसू थे। ये आंसू अपने अहंकार के पश्चाताप के लिये थे।

पृष्ठ १३ का शेष

शराब···और औरत ! यही तो उमर खैयाम ने कहा था। यहीं तो ऊंची सोसायटी के पास है। जी भर कर है—बदहजमी होने तक है—इसके अलावा और क्या चाहिए ?

कमरे का दरवाजा बन्द हो गया और वह दोनों सो गये।

वह चौंक पड़ा और जल्दी से उठ बैठा।

'आह···तुम कितने स्वीट···कितने डार्लिंग हो। अब कब मिलोगे ?' उस लड़की ने अंगड़ाई लेकर कहा।

'देखो !'

'खुशामद मत कराना !' वह बोली, 'लेकिन अभी क्यों जा रहे हो ? अभी तो एक घंटा बाकी है।'

'नहीं, अब मैं जाऊंगा।'

नशा अभी पूरी तरह उतरा नहीं था। लेकिन मुंदी हुई आंखें थोड़ी सी खुल गयी थीं। पहले बदन में ऐंठन सी थी। अब थकान आ गई थी। वह झूमता हुआ उठा।

'मेरा दिल तो नहीं करता जाने को। तुम चले जाओ, ड्राइवर के साथ।'

'हाँ, मैं चला जाऊंगा। लेकिन जाऊं कहाँ ?'

'शायद तुमने पहली बार पी है ? इसलिए ज्यादा नशे में हो। ड्राइवर तुम्हें पहुंचा देगा।'

तभी आहट सी हुई। सुशील बाहर निकल आया। उसने देखा जो साहब सीमा के साथ गये थे, कार से उतर रहे थे। सुशील को देख कर उन्होंने बुरा-सा मुंह बनाया और जब सुशील उनके पास पहुंचा तो अपनी पूरी ताकत से उसकी पीठ पर एक घूंसा मारा। लेकिन सुशील को ऐसा लगा जैसे वह कोट की गर्द झाड़ रहे हों।

'इन्हें वहीं छोड़ आओ जहां से लाये हो। उन्होंने ड्राइवर से कहा।

सुशील कार में जा बैठा। नशे में जो कमी आ गयी थी; वह फिर हल्की तेजी में बदलने लगी।

कार उसके कमरे के सामने रुकी। उसने देखा ड्राइवर मुस्करा रहा था।

उसने कमरे के दरवाजे को धक्का दिया। सीमा ने दरवाजा खोल दिया। और फिर जैसे ही सुशील अन्दर आया, सीमा ने उसकी बांहों में बांहें फंसा दीं।

'बिजली तो जला दो !' सुशील बोला।

'उसे तो बुझाना ही है।'

'कपड़े भी तो बदलने हैं।'

'बदलने हैं या उतारने हैं ?'

लेकिन सुशील ने बत्ती जला दी और सीमा की ओर देख कर बड़ी नर्मी से बोला—

'तुम होस्टल नहीं गयीं ?'

'आपकी वजह से···।'

'अच्छा तुम बैठो, मैं अभी आया···।' सुशील ने बात काट कर कहा।

वह गुसलखाने में चला गया। कपड़े उतारे। हाथ-मुंह धोए। तौलिए से रगड़-रगड़ कर सिर पोंछा और फिर कपड़े बदल कर कमरे में आ गया।

सीमा लेटी हुई थी। उसकी आंखें नींद से बोझिल थीं। साड़ी पूरे बिस्तर पर बिखरी हुई थी।

'आइए ना !' वह ठुनककर बोली।

'आ रहा हूँ !' सुशील ने कहा और धीरे-धीरे पलंग के पास आया और लेट गया।

सीमा ने कुछ झेंपते हुए कहा—

'क्या बत्ती जलती ही रहेगी ?'

'हाँ !'

'हमें शर्म लगेगी।' सीमा ने बड़े अंदाज से कहा, 'बुझा दीजिए ना।'

सुशील उठा। बत्ती बुझा दी। और बिस्तर पर आ लेटा।

सीमा दो-तीन मिनट तक इन्तजार करती रही लेकिन फिर वह सब्र न कर सकी। सुशील के गले में बांहें डाल कर बोली—

'कुछ पीजिएगा ?'

'नहीं !'

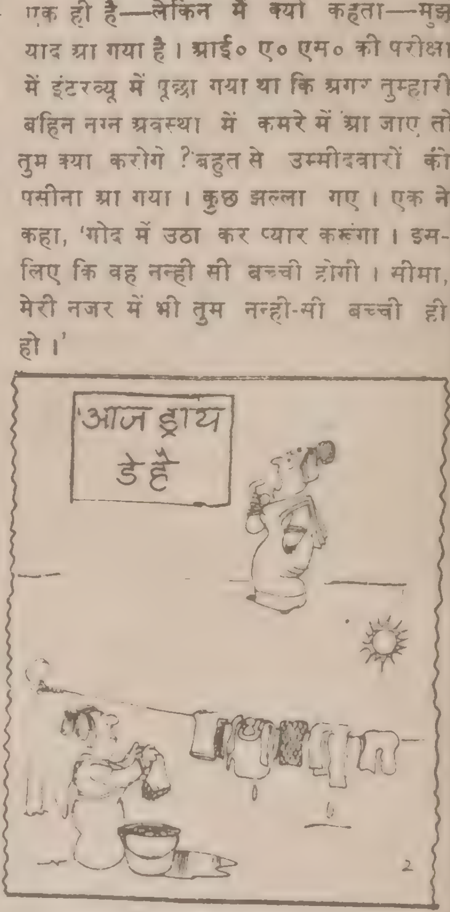
'फिर !' सीमा ने कहा और सुशील का हाथ अपने गालों तक ले गई।

सुशील ने बड़े प्यार से उसे अपनी ओर खींच लिया। सीमा का सिर उसके सीने से आ लगा।

'अब सो जाओ। तुम यह न सोचना कि मेरा नशा उतर गया है। अभी सिर में धमक है। फिर भी मैं होश में हूँ ! सीमा ! मैं जानता हूँ कि तुम मुझे बहुत चाहती हो। यह भी जानता हूँ कि इस जिन्दगी में हर तरह की प्यास होती है। तुम्हारी आत्मा अभी भी प्यासी है—तुमने जो कुछ हिकायतें की हैं, उनके धब्बे धोने के लिए तुम्हारे भाई का प्यार मौजूद है। उस भाई का प्यार जो तुम्हारे पास लेटा हुआ है। जिसके सीने से तुम्हारा सिर लगा हुआ है।'

घुटी आवाज गुनाई दी।

'शाम को तुम मेरे सीने से लग गई थीं। ऐसा लगा था जैसे सारी दुनिया की दौलत मिल गई हो। और अब मेरे पास लेटी हो। ऐसा लग रहा है जैसे हम बारह-तेरह वर्ष पीछे की जिन्दगी में हैं। जी चाहता है तुम्हारी चोटी पकड़ कर नोंच डालूं। तुमने सोचा होगा कि मैं आते ही कहूँगा—पलंग एक ही है—लेकिन मैं क्यों कहता—मुझे याद आ गया है। आई० ए० एम० की परीक्षा में इंटरव्यू में पूछा गया था कि अगर तुम्हारी बहिन नग्न अवस्था में कमरे में आ जाए तो तुम क्या करोगे ? बहुत से उम्मीदवारों को पसीना आ गया। कुछ झल्ला गए। एक ने कहा, 'गोद में उठा कर प्यार करूंगा। इसलिए कि वह नन्ही सी बच्ची होगी। सीमा, मेरी नजर में भी तुम नन्ही-सी बच्ची ही हो।'



'क्या आप सारी रात इसी तरह बकवास करते रहोगे ?'

'नहीं, सोऊंगा !' सुशील ने कहा और करवट बदल कर आंखें मूंद लीं और दो मिनट बाद ही सो गया।

सुबह सुशील की आंख खुलीं तो सीमा वहां नहीं थी।

वह सारे दिन भर नहाता रहा। उसे ऐसा लग रहा था जैसे सारे बदन में कीड़े कुलबुला रहे हों। रोंए की तरह चिपक गए हों। नहाने के बाद वह सो गया। शाम को फिर नहाता रहा और बीती हुई रात के बारे में सोचता रहा। मधु और रंजन के चित्र उभरते रहे। शाम को

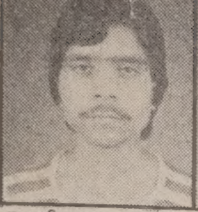
सवाल यह है ?

क्या प्राचीन लोक कथा और आज की परलोक कथा का कोई जवाब है ?





...वोश कुमार राहेल, मकान ...म्बर एच० एम० १७० फेज ... मोहाली, जिला रूपनगर ...जाब), १३ वर्ष, टिकट ...टठी करना।



मु० आदिल अख्तर, ५७४/४५ सूफी टोला, पुराना शहर, बरेली, २० वर्ष, फिल्म देखना, कबूतर उड़ाना और पालना।



दिनेश कुमार जैन द्वारा तेजमल जैन एडवोकेट, १२४, पुरानी धान मण्डी, अग्रसेन बाजार, कोटा (राज०), १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना।



अजय कुमार माथुर, श्री रामचन्द्र माथुर, मौ० ठेर, सुनार गली, १६ वर्ष, टिकट संग्रह, दुर्गा की भक्ति करना, खुश रहना।



दिनेश गोयल, ताज फोर-प्रिन्स बाक्स नम्बर ३५७, जनता नगर, भगवान, चौक लुधियाना, १६ वर्ष, फोटो-ग्राफी करना।



सुरेन्द्र कुमार, बालका हाउस, बाई जी का तालाब, जोधपुर, १६ वर्ष, देश-विदेश में घूमना, पत्रिकायें पढ़ना, फिल्म देखना।



अजय कुमार महान, रीतू राज फोटो स्टिल्स महाल नागपुर, १३ वर्ष, क्रिकेट खेलना, पान खाना, पढ़ना और स्वास्थ्य का ध्यान रखना।



...शोक कुमार मोंगा द्वारा ...भराम, एल०-२, प्रेम घर, ...रीदकोट, १६ वर्ष, दोस्ती ...रना, पढ़ना तथा पत्र-...त्रता करना।



प्रेम भूषण नागपाल, पी०/२१, वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली, १७ वर्ष, हर किसी से दोस्ती करना तथा पढ़ना।



मोहम्मद अरशद, ५३४/२, कालापार मुजफ्फर नगर, १६ वर्ष, उपन्यास पढ़ना, खेलना, कूदना, दूसरों की मदद करना।



अशोक रा०, सपरूले सम्राट अशोक नगर, नवजीवन बबूरबन्ना ई०-७४, १६ वर्ष, क्रिकेट खेलना, किताब पढ़ना पढ़ाई करना।



संजय कुमार गुप्ता, ११३८, गली समोसा, फराश खाना देहली, १५ वर्ष, डाक टिकट संग्रह करना, क्रिकेट खेलना, तैरना।



शीतल प्रसाद माथुर, कायस्थ मोहल्ला, पुरानी मण्डी, अजमेर, १६ वर्ष, पढ़ाई करना, रेडियो सुनना और मित्रता करना।



कृष्ण चन्द्र तिवारी, ग्राम नगहरा, पो० पोखरा बाजार, जिला बस्ती (उ० प्र०), १५ वर्ष, क्रिकेट खेलना, पढ़ना, सैर करना।



...फकार अहमद, असालत-... फैंसी प्रेस, मुरादाबाद ...प्र०), १६ वर्ष, क्रिकेट ...ा, किताबें पढ़ना तथा ...ी करना।



प्रदीप कुमार चतुर्वेदी, १२८/२०५, एच० ब्लाक, किदवई नगर, कानपुर, १७ वर्ष, फिल्म देखना, दीवाना पढ़कर दीवाना बनना।



राकेश खोसला, रोल नम्बर ६५२, राम वाड़िया कालिज फगवाड़ा, १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, टिकट संग्रह करना।



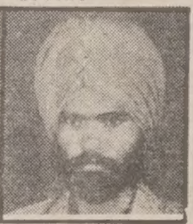
राजकुमार 'प्रिन्स', लाल टकी रोड, रायगढ़, १८ वर्ष, फिल्मी स्टारों से पत्र-मित्रता करना, फिल्म देखना, टी० वी० देखना।



संजय चक्रवर्ती, 'एरोमयस' स नगर टोली, पटना, (बिहार), १६ वर्ष, जासूसी करना, स्कूटर चलाना, सैर करना, घूमना-फिरना।



चिन्मय महतो बनफुल, उलियान, कदमा, जमशेदपुर, २१ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, फर्माइश भेजना, रेडियो सुनना।



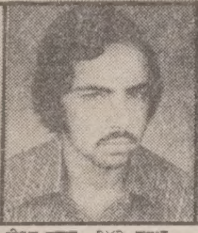
प्रेम सिंह रंधावा, मकान नं० ११६-ए०, न्यू कालोनी, २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना, स्कूटर चलाना, सैर करना, पान खाना।



...र अहमद सिद्दिकी, कसाब ...न, मकान नम्बर ६५, ... सराय, दिल्ली, १४ ... साईकिल चलाना, क्रिकेट ...ा।



सुभाष चक्रवर्ती उर्फ राजा, ६८/२७६, छितवापुर पजावा, लाल कुआ, लखनऊ, २२ वर्ष, पत्र-मित्रता, तर्क करके कुछ सीखना।



नीरज कुमार, २४२ अनार-कली बाजार, जगराओं, (लुधियाना, २० वर्ष, मैच की कमैंटरी सुनना, फिल्म देखना।



हरिश्चन्द्र आर्य, बी० नम्बर २, मकान नम्बर २४४, फिरोजपुर केन्ट, १६ वर्ष, पढ़ना, बड़ों का आदर करना, हंसना-हंसाना।



राधेश्याम शोयल, क० नम्बर सी०-११-I ए० खेतड़ी नगर, जिला झुन्झुनू (राजस्थान), १६ वर्ष, पत्र-व्यवहार करना, फिल्म देखना।



विजय कुमार मुलीवा, मकान नम्बर ६०, बापू नगर, पाली, १५ वर्ष, डाक टिकट संग्रह करना, दोस्ती करना, बाग-बानी करना।



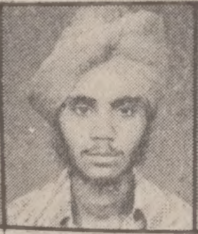
वली मोहम्मद कुरैशी, आनन्द मार्ग, उरस्वद गेट, धार (म० प्र०), १८ वर्ष, मित्रता करना, घूमना-फिरना, फिल्म देखना।



...शाहजा, ५-डी०, कृष्णा ..., मथुरा, २१ वर्ष, क्रिकेट ...ना, स्कूटर चलाना, पत्र-...ता करना, दूर-दूर की ... करना।



इकबाल सक्का उदयपुरी, साजवक्स, ४० बोड़पाड़ा, उदयपुर (राजस्थान), २० वर्ष, गजलें लिखना, नए-नए कपड़ा पहनना।



अमृत सिंह, यूनाइटेड सामील दुर्गापुर, १८ वर्ष, स्कूटर चलाना, पिक्चर देखना, पत्र-मित्रता करना, दूसरों की सोचना।



शान् खुराना 'मुरेश' ५४/३ खुराना भवन, जीन्द, २० वर्ष, पत्र लेखन, फर्माइश भेजना, पढ़ना, दीवाना बनना।



प्रशान्त शर्मा, गाजोपुरा, नान्देड़, १७ वर्ष, मोटर चलाना, घूमना-फिरना पत्र-व्यवहार करना, सुखी जीवन बनाना।

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। लिफाफे के कोने पर 'पेन फ्रेन्ड' लिखना व फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना-८-बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली-११०००२

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ____

पता ____

आयु ____ शौक ____

...प्रैस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

१८ जनवरी से २४ जनवरी ७६ तक

मेष : सप्ताह अच्छा रहेगा, धन की प्राप्ति होने से परिवार की स्थिति सम्भलेगी, वातावरण सुधरेगा, लाभ के साथ खर्च भी काफी होगा, शत्रु पैदा होकर नष्ट होंगे, भाइयों की ओर से चिन्ता बनी रहेगी।

वृष : दिलचस्प होने के साथ-साथ सप्ताह संघर्षमय भी है, शत्रु पस्त होंगे फिर भी सावधानी से रहें, यात्रा अचानक ही होगी, कुछ अड़चनों के बावजूद भी कार्य बनते रहेंगे और व्यापार भी सुधरेगा।

मिथुन : धन लाभ यथावत होता रहेगा और आर्थिक उलझनें भी कम होती जायेंगी, कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी, घर-गृहस्थी के कार्य सफल होंगे, भाग्य सहारा देगा, समय पर सफलता मिलती रहेगी।

कर्क : अशुभफलों के साथ-साथ उत्तमफल भी मिलते रहेंगे, आत्म-विश्वास बढ़ेगा, प्रयत्न करने पर कार्य सिद्ध हो सकेंगे, अकस्मात झगड़े से मन बेचैन, बड़े लोगों से सहयोग मिले .।

सिंह : अचानक वैर-विरोध से बनते कार्यों में बाधा या बनकर भी बिगड़ सकते हैं, आत्मबल बना रहेगा, रोजगार व काम-धंधों से लाभ होता रहेगा, राजकाज में विजय, घरेलू चिन्ता रहेगी।

कन्या : अधिक उलझनें पैदा होंगी परन्तु आपके कार्य सिद्ध होते रहेंगे, जायदाद सम्बन्धी कार्यों में वाद-विवाद ही होगा सफलता न मिलेगी, भाग्य सहारा से काम-धन्धा ठीक चलेगा।

तुला : अशुभफलों की कमी होगी और शुभफलों में वृद्धि, परन्तु साथ-साथ संघर्ष भी काफी करना पड़ेगा, राजकाज में विजय और सुधार की नई योजनाएं सामने आयेंगी, शत्रु पराजित होंगे।

वृश्चिक : सम्पत्ति आदि के कामों में झगड़े झंझट का भय है, सूझ बूझ एवं अच्छे लोगों की राय से काम करने पर आपको सफलता मिल सकती है, रोजगार में उन्नति एवं लाभ बढ़ेगा।

धनु : अच्छी संगति से बिछड़े कार्य बन जायेंगे और लाभ भी अच्छा होता रहेगा, सुख साधनों पर व्यय एवं नई वस्तुओं की खरीद भी होगी, आर्थिक उलझनें दूर होती जायेंगी।

मकर : रोजगार व काम धन्धों में उन्नति के अवसर आयेंगे और उन्नति होगी भी परन्तु आर्थिक लाभ की प्राप्ति कुछ देर से होगी, आत्म-शक्ति मजबूत रहेगी, घरेलू चिन्ता बढ़ेगी।

कुम्भ : भाग्य सहारा देता रहेगा और व्यवसाय में उन्नति होगी, रोजगार में कोई नवीन योजना बनेगी जो लाभप्रद रहेगी, शरीर में कष्ट या छोटे-छोटे रोगों से सेहत खराब रहेगी।

मीन : पारिवारिक समस्याएं बढ़ेंगी जिससे कामकाज में विघ्न, उत्तम संगति से साहस बढ़ेगा और प्रयत्न करने पर कामों में सफलता मिलेगी, रोजगार में सुधार तो होगा परन्तु संघर्ष काफी करना पड़ेगा।



रिसेप्शनिस्ट से एक्ट्रेस तक

परवीन बाबी

—विजय भारद्वाज

परवीन बाबी का जन्म ४ अप्रैल को जूनागढ़ (गुजरात) में हुआ। इन्होंने एम० ए० (अपूर्ण) तक शिक्षा प्राप्त की है।

उन्मुक्त प्रेम में विश्वास रखने वाली, यौन सम्बन्धों के लिये विवाह को अनिवार्य न मानने वाली परवीन बॉबी बेहद मॉड हैं। गोरा रंग, सामान्य कद और तीखे नाक-नक्श वाली परवीन आज फिल्म जगत की चर्चित व प्रसिद्ध अभिनेत्रियों में से एक हैं।

फिल्म लाईन में आने से पूर्व यह अहमदाबाद में मार्डलिंग किया करती थीं। इन्होंने रिसेप्शनिस्ट के रूप में भी कार्य किया है।

परवीन बॉबी की प्रथम फिल्म थी 'चरित्र'। लेकिन इस फिल्म से परवीन को विशेष प्रसिद्धी नहीं मिली। इन्हें जिस फिल्म से प्रसिद्धी मिली वह थी 'दीवार, जिसमें इन्होंने बेमिसाल अभिनय किया था और वह भी आज के सुपर स्टार अमिताभ बच्चन के साथ।

'दीवार' की खिड़की तोड़ सफलता के बाद फिल्म उद्योग में परवीन बॉबी का नाम एक चर्चा का विषय बना रहा और परवीन को एक के बाद एक ढेरों फिल्में मिलती चली गईं। 'मामा भांजा', 'सोना चांदी' उनकी प्रदर्शित फिल्मों में उल्लेखनीय हैं।

परवीन बॉबी की आने वाली फिल्मों में प्रमुख फिल्में हैं 'एक्सीडेंट', 'देश प्रेमी', 'चमत्कार', रजिया सुल्तान', 'दि बर्निंग ट्रेन', 'चैलेंज', 'चलता पुर्जा', 'करिश्मा', सुल्तान', 'दो और दो पांच', 'खुदा गवाह', 'मेरा दोस्त मेरा दुश्मन' आदि-आदि।

फिल्म 'ताकत' के सैट पर परवीन बाबी से दीवाना साप्ताहिक के लिये दो बातें करने का मौका मिला।

'आप कबीर बेदी की दोस्ती के कारण काफी लापरवाह हो गई थीं। अपनी फिल्मों की ओर भी आप ध्यान नहीं देती थीं। इसके बारे में आप कुछ कहेंगी?'

'हां! मैं नादानी में प्रेम की धारा में बह गई थी। लेकिन मुझे जल्दी ही अपनी इस गलती का एहसास हो गया। मुझे महसूस हुआ कि मैं अपने रोमांस की वजह से फिल्म उद्योग से दूर होती जा रही हूं। लिहाजा मैंने शीघ्र ही निर्णय लिया, कबीर से दोस्ती तोड़ दी और अब मैं सिर्फ अपनी फिल्मों पर ध्यान देती हूं। अब मैं कभी सैट पर लेट नहीं पहुंचती। यही कारण है कि मैं अपनी खोई गई प्रतिष्ठा फिर से कायम कर रही हूं। आज मेरे पास ढेरों फिल्में हैं।

'आपने कभी विवाह करने के बारे में सोचा है? आप कब विवाह करेंगी, कैसे पति की आप कल्पना करती हैं?' मैंने पूछा।

'मैं विवाह अवश्य करूंगी, लेकिन कब करूंगी यह अभी नहीं बता सकती। मैं उन्मुक्त प्रेम में विश्वास रखने वाले और नारी की स्वतंत्रता की हामी भरने वाले अच्छे कद-काठी वाले नौजवान से विवाह करूंगी।' परवीन ने स्पष्ट जवाब देते हुए कहा।

'फिल्मों में चुम्बन के बारे में आपके क्या विचार हैं?'

'चुम्बन कोई बुरी चीज नहीं है। यदि कहानी की मांग हो और वास्तव में चुम्बन दृश्य आवश्यक हो तो इसमें कोई एतराज वाली बात मुझे तो महसूस नहीं होती।' परवीन ने पलकें झपकाते हुए जवाब दिया।

पता है—

कल्लूमल स्टेट,
जुहू बम्बई-४००